

# अभय कुमार

के अनोखे  
कारनामे



# जैन चित्र कथाएँ

सुनो सुनाये सत्य कथाएँ

आशीर्वाद

परम पूज्य चारित्र चक्रवर्ति आचार्य श्री शान्ति सागर (दक्षिण) के षष्ठम्  
पट्टाचार्य श्री अभिनन्दन सागर जी महाराज

|                                                                                     |   |                                                             |
|-------------------------------------------------------------------------------------|---|-------------------------------------------------------------|
| प्रकाशक                                                                             | : | आचार्य धर्मश्रुत ग्रन्थ माला                                |
| कृति                                                                                | : | अभय कुमार के अनोखे कारनामों                                 |
| ©                                                                                   | : | सर्वाधिकार सुरक्षित                                         |
| सम्पादक                                                                             | : | ब्र. धर्मचन्द शास्त्री प्रतिष्ठाचार्य                       |
| पुष्प नं                                                                            | : | 35                                                          |
| मूल्य                                                                               | : | 20.00                                                       |
| प्राप्ति स्थान                                                                      | : | जैन मंदिर गुलाब वाटिका लोनी रोड़<br>जिला गाजियाबाद (उ.प्र.) |
|  | : | 914-600074                                                  |
|                                                                                     |   | S.T.D. 0575-4600074                                         |

छठा पट्टाचार्य पदारोहण

मंगल दिवस

के पुण्य अवसर पर जैन चित्र कथा 'अभय कुमार के अनोखे कारनामे'

अंक का प्रकाशन

10-2-2000 वसंत पंचमी

सनमार्ग दिवाकर आचार्य विमल सागर जी महाराज के

पट्टशिष्य

प्रशान्त मूर्ति मर्यादा पुरुषोत्तम ज्ञान दिवाकर

वाणीभूषण आचार्य 108

परम पूज्य श्री भरत सागर जी महाराज

के

आचार्य पदारोहण दिवस के पुनीत अवसर पर

प्रकाशन समिति आपके चरणों में विनय पूर्वक नमोस्तु करते हैं।

प्रकाशक

श्री भारतवर्षीय अनेकान्त विद्वत् परिषद

एवं

आचार्य धर्म श्रुत ग्रन्थ माला



सम्पादक

ब्र. धर्मचंद शास्त्री

ज्योतिषाचार्य, प्रतिष्ठाचार्य

जैन मन्दिर गुलाब वाटिका लोनी रोड दिल्ली (गाजियाबाद)

फोन : 0575-4600074

# जैन चित्र कथाएं

सुनो सुनाये सत्य कथाएं

आशीर्वाद

क्षुल्लिका 105 श्री राजमती माता जी

|                |   |                                                             |
|----------------|---|-------------------------------------------------------------|
| प्रकाशक        | : | आचार्य धर्मश्रुत ग्रन्थ माला                                |
| कृति           | : | अभय कुमार के अनोखे कारनामे                                  |
| ©              | : | सर्वाधिकार सुरक्षित                                         |
| लेखक           | : | ब्र. धर्मचन्द शास्त्री प्रतिष्ठाचार्य                       |
| पुष्प नं       | : | 43                                                          |
| मूल्य          | : | 20.00                                                       |
| प्राप्ति स्थान | : | जैन मंदिर गुलाब वाटिका लोनी रोड़<br>जिला गाजियाबाद (उ.प्र.) |



: 914-600074

S.T.D. 0575-4600074

## सम्पादकीय

समाज में लाखों बच्चे जैन कथानको से अनभिज्ञ हैं, उन्हें जैन धर्म, संस्कृति, साहित्य के साथ कथानको की जानकारी हेतु आचार्य धर्म श्रुत ग्रन्थमाला से प्रकाशित जैन चित्र कथा को अब तक ५० अंकों में प्रकाशित किए हैं तथा इस प्रकार की श्रृंखला आगे बढ़ रही है।

संस्था के द्वारा नयी भाषा एवं नई शैली में सुनो सुनाएँ सत्य कथाएँ के नाम से नया प्रकाशन शुरू किया है। इस सीरीज में अनेक पुस्तकों का सेट तैयार हो रहा है जो बच्चों के भविष्य को उज्ज्वल बना सकें। परम पू० आचार्य श्री धर्मसागर जी महाराज स्व० आचार्य कल्प श्रुतसागर जी महाराज की प्रेरणा एवं मंगल आशीर्वाद से बाल साहित्य का प्रकाशन शुरू किया गया था। इस पुनीत कार्य के लिए पंचम पट्टाचार्य स्व० श्री श्रेयांससागर जी महाराज का मंगल आशीर्वाद प्रकाशन समिति को मिला।

आर्ष परम्परा के महान साधक स्व० आचार्य श्री विमलसागरजी महाराज का मंगल आशीर्वाद प्रकाशन समिति को सदा रहा है।

परम पूज्य ज्ञानदिवाकर आचार्य श्री भरत सागर जी महाराज, प्रज्ञा श्रमण युवा मुनि श्री अमितसागर जी महाराज का मंगल आशीर्वाद एवं प्रेरणा वर्तमान में प्रकाशन समिति को प्राप्त हो रहा है।

परम पूज्य गणिनी आर्यिका ज्ञानमती माता जी परम पूज्य गणिनी आर्यिका सुपाश्वर्य मति माता जी, श्री आर्यिका आदिमति माताजी, आर्यिका श्रेयांसमति माता जी आर्यिका स्याद्वादमति माता जी का मंगल आशीर्वाद संस्था को प्राप्त है। परम पूज्य क्षु० राजमति माता जी तथा भारत वर्ष में सर्वत्र जैन गुरुओं के निर्देशन में बाल साहित्य प्रकाशित किया जा रहा है। तथा प्रकाशित होता रहेगा।

‘अभय कुमार के अनोखे कारनामों’ नामक पुस्तक के प्रकाशन के लिए षष्ठम पट्टाचार्य श्री अभिनन्दन सागर जी महाराज ने भी शुभाशीर्वाद दिया है। संस्था का उद्देश्य बाल साहित्य का प्रकाशन कर जन जन तक पहुँचाकर ज्ञान का प्रचार-प्रसार करना।

समाज के उदारमना दानवीर विशिष्ट सहयोगीयों से भी अनुरोध है कि पत्रिका के स्थायित्व के लिए हमें अपना संरक्षण प्रदान करें एवं परिचितों, मित्रों आदि को पढ़ने हेतु प्रेरणा दें।

श्री दि० जैन मंदिर  
गुलाब वाटिका लोनी रोड दिल्ली  
जिला० गाजियाबाद

संचाकल  
ब्र० धर्मचंद शास्त्री  
प्रतिष्ठाचार्य

## अभय कुमार

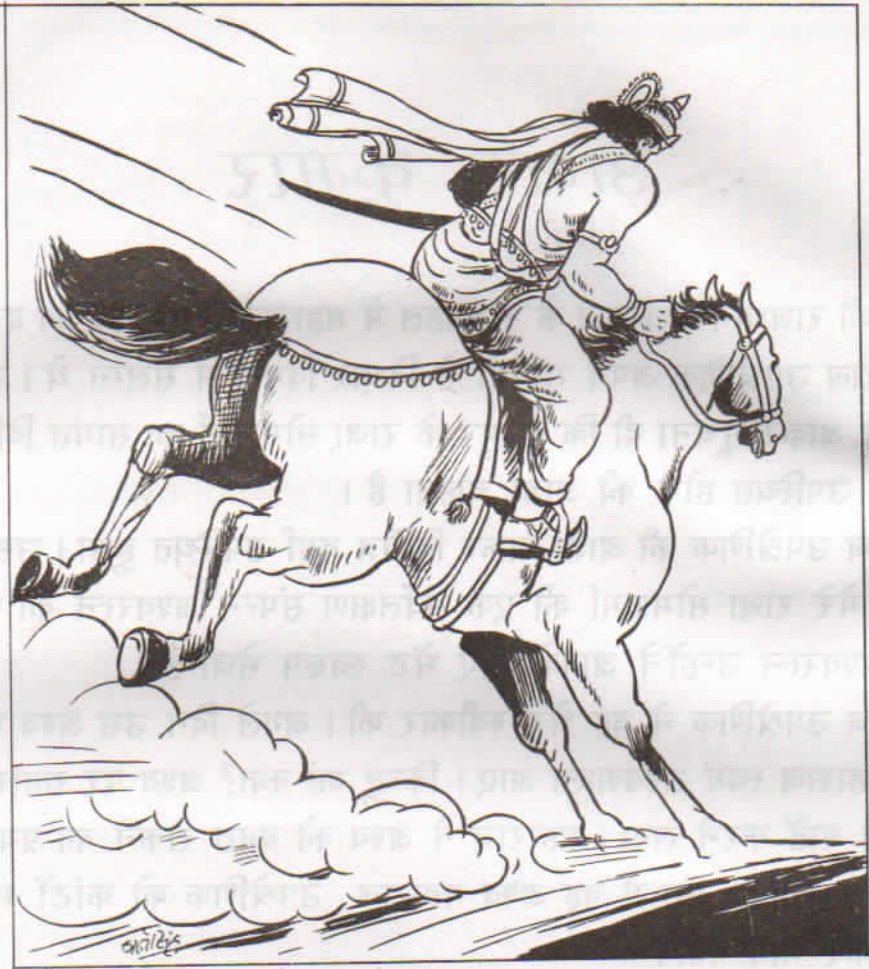
मगध की राजधानी गिरिव्रज के राजमहल में महाराज उपश्रेणिक का दरबार लगा था। महाराज उपश्रेणिक अपने मंत्रियों से विचार विमर्श में संलग्न थे। उसी समय द्वारपाल ने आकर सूचना दी कि चंद्रपुर के राजा सोमशर्मा का सामंत विचित्र वर्मा, दरबार में उपस्थित होने की आज्ञा चाहता है।

महाराज उपश्रेणिक की आज्ञा पाकर विचित्र वर्मा उपस्थित हुआ। उसने कहा— 'महाराज! मेरे राजा सोमशर्मा की एक सर्वलक्षण संपन्न अश्वरत्न की प्राप्ति हुई है। वह अश्वरत्न उन्होंने आपके लिए भेंट स्वरूप भेजा है।

महाराज उपश्रेणिक ने वह भेंट स्वीकार की। अगले दिन उस अश्व की परीक्षा के लिए महाराज स्वयं अश्वशाला आए। किन्तु यह क्या? अश्व पर सवार होते ही, वह हवा से बातें करने लगा। महाराज ने अश्व को बहुत रोकने का प्रयत्न किया, किन्तु वह न रुका। अंत में वह अश्व महाराज उपश्रेणिक को कांटों भरे गड्ढे के पास गिराकर भाग गया।

महाराज बहुत देर तक वहां पड़े रहे। तब एक भील आया वह महाराज को उठाकर घर ले गया। उनकी बहुत सेवा की महाराज कई दिनों तक वहां रहे। उनकी सेवा का भार भील की कन्या तिलकवती पर था महाराज के हृदय में तिलकवती के प्रति प्रेम जाग उठा। अस्तु एक दिन उन्होंने भील से उसकी कन्या से विवाह करने की इच्छा प्रकट की। भील ने प्रस्ताव स्वीकार करते हुए एक शर्त रखी की युवराज का पद तिलकवती से उत्पन्न पुत्र को ही मिलेगा। उस समय महाराज के ज्येष्ठ पुत्र बिंबसार इस पद के अधिकारी थे। किन्तु महाराज उपश्रेणिक ने भील को वचन दे दिया इसके बाद तिलकवती से विवाह करके उपश्रेणिक उसे राजमहल में ले आए।

एक वर्ष बाद तिलकवती ने एक पुत्र को जन्म दिया पुत्र जन्म के बाद महाराज उपश्रेणिक, राज्य के उत्तराधिकारी के प्रश्न को लेकर चिंतित रहने लगे। उधर राजकुमार बिंबसार की प्रतिभा दिन दूनी रात चौगुनी विकसित हो रही थी।



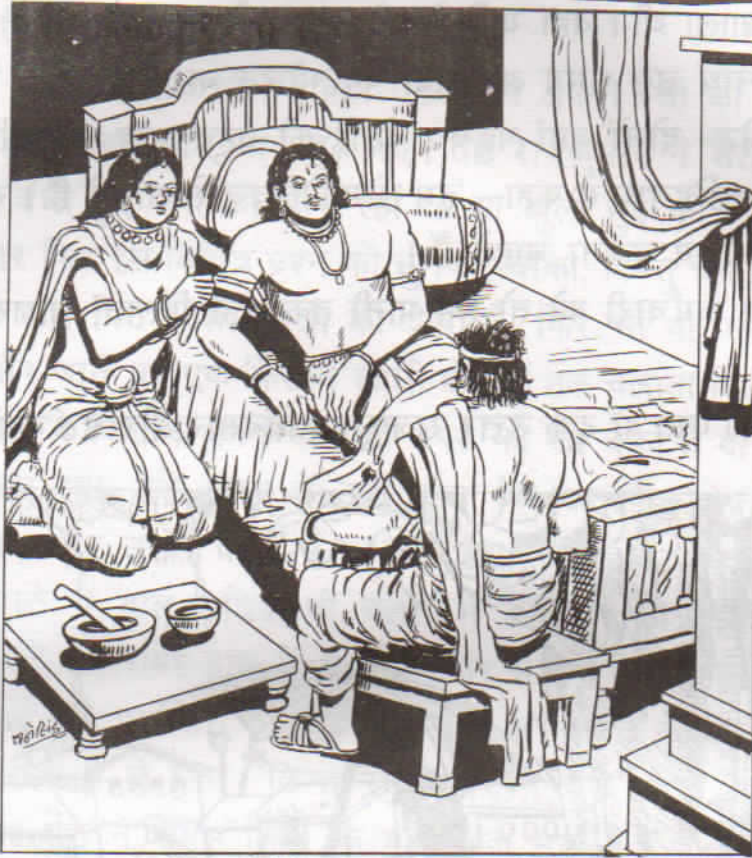
किन्तु यह क्या? अश्व पर सवार होते ही वह हवा से बातें करने लगा

समय बीतता गया। फिर वह दिन भी आया जब राजकुमार बिंबसार और तिलकवती पुत्र चिलाती बड़े हो गए। जनता अपने युवराज की घोषणा सुनना चाहती थी। महाराज के सामने विकट समस्या उत्पन्न हो गयी। वह समझ नहीं पा रहे थे कि बिंबसार से छीनकर युवराज पद चिलाती को कैसे दें? आखिर उन्होंने महामात्य कल्पक को बुलाकर अपनी समस्या बतायी। कल्पक ने कहा— 'महाराज! आप उत्तराधिकारी चुनने के लिए एक प्रतियोगिता करें। जो राजकुमार चुना जाय, उस पर राजद्रोह का आरोप लगाकर उसे देश-निकाला दे दें। इसके बाद राजकुमार चिलाती को उत्तराधिकारी बना दें।

महाराज उपश्रेणिक को यह उपाय ठीक लगा। अगले ही दिन प्रतियोगिताओं की घोषणा की गयी। संयोगवश उन प्रतियोगिताओं में राजकुमार बिंबसार ही प्रथम रहे। बिंबसार वैसे भी हर तरह से योग्य थे। किन्तु अब उन पर राजद्रोह का अभियोग

लगाकर उन्हें देश-निकाला दिया जाना था।

महामात्य कल्पक ने कहा- 'महाराज! राजकुमार बिंबसार ने अपने पास पांच सौ सैनिक रख रखे हैं। उसी आधार पर राजद्रोह का अभियोग लगाया जा सकता है।



अब राजा को कांटों भरे खड्ड में गिरा गया। एक भील उन्हें अपने घर ले गया, उसकी कन्या तिलकवती ने राजा की बहत सेवा की।

महाराज उपश्रेणिक ने तब राजकुमार बिंबसार को बुलवाया। उन्होंने जब उसे पांच सौ सैनिक रखने के कारण राजद्रोह का अभियोग लगाकर देश-निकाले का आदेश सुनाया तो बिंबसार घबरा गये। किंतु फिर बड़े धैर्य से बिंबसार ने कहा- 'पिता जी! मैंने जो सैनिक रखे हैं, उनका वेतन मैं देता हूँ। उनको मैंने विद्रोह करने के लिए नहीं रखा। फिर भी आपने जो आदेश दिया है, उसका मैं अवश्य पालन करूंगा। और बिंबसार प्रणाम करके वहां से चले आए।

अगले दिन महाराज उपश्रेणिक ने राजकुमार चिलाती को युवराज पद देने की घोषणा कर दी। उधर राजकुमार बिंबसार ने गिरिव्रज छोड़ दिया। वहां से चलने से पहले उन्होंने अपने पांच सौ सैनिकों से कहा कि जब मेरे दिन फिर लौटेंगे तो

मैं तुम सबको अपने पास बुला लूंगा।

राजकुमार बिंबसार ने उस दिन गिरिव्रज में भोजन भी नहीं किया। पैदल ही चल पड़े राह में एक सेठ भी मिल गया। दोपहर होते-होते वे नन्दिग्राम पहुंचे। वहां एक सुंदर धर्मशाला थी। वहां यात्रियों को मुफ्त भोजन दिया जाता था। वहां का जमींदार नन्दिनाथ उस समय अतिथियों को भोजन करा रहा था। बिंबसार और उनका साथी सेठ- दोनों वहां पहुंचे। दोनों को बहुत भूख लगी थी।

बिंबसार ने नन्दिनाथ से कहा- 'हम लोग गिरिव्रज से आ रहे हैं। राज्य कर्मचारी हैं। हम यहां भोजन करना चाहते हैं।

किन्तु राज्य कर्मचारी को तो हम पानी तक नहीं पिलाते! भोजन तो बाद की बात है।

नन्दिनाथ का ऐसा दो टूक उत्तर राजकुमार बिंबसार और सेठ वहां से चल दिए।



राजकुमार ने अपना छाता खोला और पेड़ की छाया में बैठ गये

सेठ सोचने लगा कि यह कैसा युवक है। बसे हुए गांव को देखकर भी सवाल नन्दिग्राम से बाहर आकर राजकुमार ने सेठ से पूछा- 'यह गांव बसा हुआ है या उजड़ा हुआ है?'

पूछ रहा है, उसने कुछ नहीं कहा।

आगे जाने पर एक गांव मिला। वहां एक पुरुष अपनी स्त्री को मार रहा था। दोनों ने यह दृश्य देखा और आगे बढ़ गए। तब राजकुमार ने सेठ से पूछा- 'वो आदमी अपनी बंधी हुई स्त्री को मार रहा था या खुली हुई को?'

सेठ एक बार फिर इस विचित्र प्रश्न को सुनकर चौका, किन्तु चुप ही रहा, सोचने लगा कि इसने उस पिटने वाली स्त्री को देखा है, फिर भी यह सवाल क्यों?

कुछ दूर और जाने पर एक किसान खाली खेत में हल चलाता दिखा। राजकुमार ने सेठ से पूछा- 'ये किसान अपने खेत की उपज को खा चुका है या खाएगा?' सेठ इस बार भी चुप रहा, उसे समझ में नहीं आया कि जब खेत जोत लेगा तभी तो अनाज उगाएगा, फिर उससे पहले फसल कैसे खा लेगा।

आगे के रास्ते में बालू अधिक थी चलने में कठिनाई हो रही थी। इसीलिए राजकुमार ने जूते उतारकर हाथ में ले लिये। पर सेठ ने नहीं उतारे। इसके बाद नदी पड़ी, जिसके उस पार सेठ का गांव था। नदी पार करने के लिए सेठ ने अपने जूते उतारकर हाथ में ले लिए। किन्तु राजकुमार ने जूते पहन लिए उस विचित्र बात को देखकर सेठ ने समझ लिया कि यह युवक मूर्ख है।

दोनों ने नदी पार की फिर वे एक बाग में पहुंचे सेठ ने कहा- 'सुनो! ये वेण पद्म नगर है। मैं यहीं रहता हूं, तुम थोड़ी देर इस पेड़ के नीचे विश्राम करो। मैं घर जाकर तुम्हें अभी बुलवा लूंगा।

राजकुमार ने अपना छाता खोला और पेड़ की छाया में बैठ गए। यह देखकर सेठ को हंसी आ गयी और उसकी मूर्खता पर कोई संदेह न रहा।

उस सेठ का नाम इन्द्रदत्त था। उसकी एक कन्या थी- नन्दिश्री। वह अत्यंत रूपवती और गुणवती थी। सेठ इन्द्रदत्त घर पहुंचे तो नन्दिश्री ने पूछा- पिताजी! आप अकेले आए या कोई साथ भी आया है?'

सेठ इन्द्रदत्त ने कहा- 'बेटी ! मैं अकेला तो नहीं आया। एक युवक साथ आया था। देखने में तो तेजस्वी राजकुमार-सा है, पर बातें मूर्खों-सी करता है।

क्या कहा उसने? नन्दिश्री ने पूछा।

सेठ इन्द्रदत्त ने तब वे सारे प्रश्न बता दिए जो राजकुमार ने पूछे थे।

नन्दिश्री ने कहा- 'पिताजी! नन्दिग्राम में जब भोजन नहीं मिला तो आप लोगों के लिए वह उजड़ा जैसा ही था, जो पुरुष अपनी स्त्री को मार रहा था, तो यदि वह विवाहित (बंधी हुई) को मार रहा था, तो वह घर में रह जायेगी यदि रखैल हुई तो भाग जाएगी। यदि किसान ने उपज से पूर्व ऋण ले रखा है तो उपज पहले ही खा चुका है क्योंकि उसे ऋण अदा करना पड़ेगा। उपज का लाभ उसे नहीं मिलेगा। अगर ऋण नहीं लिया तो फिर उपज उसकी होगी। इसी तरह नदी के कंकर आदि की चोट से बचने के लिए उसने जूते पहने, और पेड़ पर बैठे पक्षियों की बीट से बचने के लिए छाता लगा लिया।

इसके बाद नन्दिश्री ने अपनी दासी लंबनखी को बुलाया, उसके नाखून लंबे थे। नन्दिश्री ने कहा- 'तू अपने नाखूनों में तेल भरकर नदी किनारे वाले बाग में चली जा। वहां ऐ नवयुवक बैठा है उससे कहना- नन्दिश्री ने आपको बुलाया है। आने से पहले तेल लगाकर स्नान कर लेना, फिर तू घर का पता न बताकर सिर्फ कान दिखलाकर चली आना।'

नन्दिश्री ने वही किया। किंतु राजकुमार भी समझदार था। उसने तत्काल एक गड्ढा खोदा। उसमें पानी भरा। फिर लंबनखी के नाखूनों में भरा तेल उसमें डलवा दिया। जाते समय लंबनखी ने सिर्फ कान दिखा दिया।

राजकुमार ने गड्ढे के जल से स्नान किया। फिर कान का अर्थ ताड़ वृक्ष समझकर चल दिया। वह उस घर को खोजने लगा जिसके द्वार पर ताड़ वृक्ष लगा हो। आखिर वह घर मिल गया। पर द्वार के बाहर बहुत कीचड़ था। घर के अंदर जाने के लिए कुछ- कुछ दूरी पर पत्थर रखे थे। राजकुमार पत्थरों को छोड़कर कीचड़ में पैर धंसाते हुए द्वार पर पहुंचे।

नन्दिश्री ने उनका स्वागत किया और आधा गिलास जल देकर कहा- 'पहले आप पैर धो लें।'

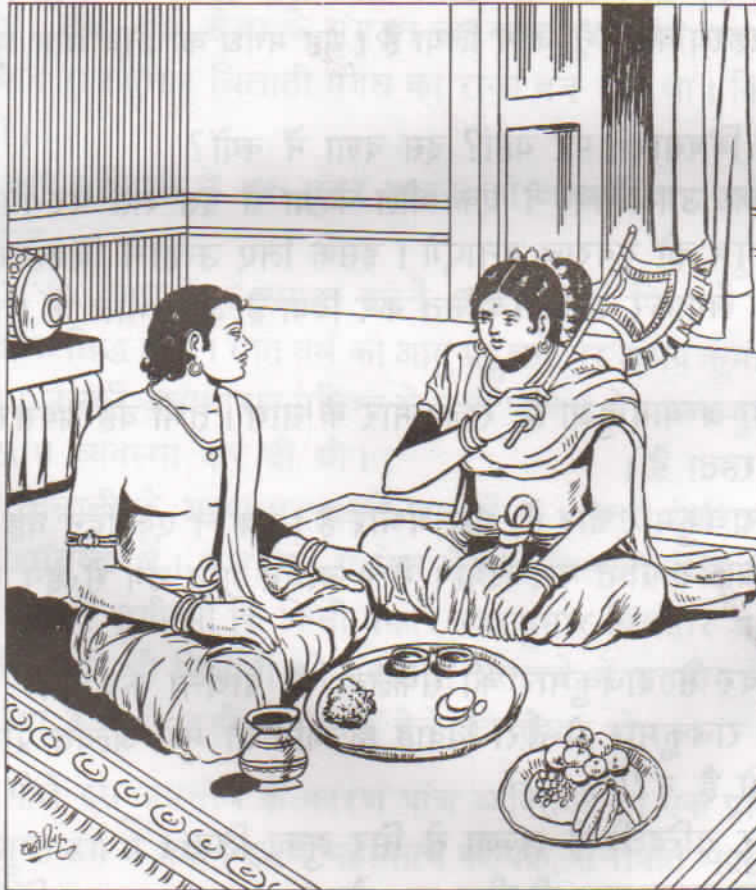
राजकुमार समझ गया कि उसकी परीक्षा ली जा रही है। वह एक नाली के पास बैठे। एक लकड़ी लेकर सारा कीचड़ साफ किया। फिर जल से पैर धोए और बचा हुआ जल नन्दिश्री को दे दिया।

नन्दिश्री, राजकुमार के रूप, यौवन और गुणों को देखकर उससे मन ही मन प्रेम करने लगी। उसने अब तक जान लिया था कि राजकुमार असाधारण रूप से बुद्धिमान है। नन्दिश्री स्वयं भी अत्यंत बुद्धिमान थी। फिर भी, राजकुमार से विवाह की बात सोचने के पहले उसने हर तरह से उसकी परीक्षा लेने का निश्चय कर लिया था। उसने राजकुमार के उच्चकुलीन होने का पता लगाने के लिए, उन्हें एक मोती दिया। बोली- मैं इसे नहीं पिरो सकी। क्या आप इसमें डोरा डाल देंगे?’

नन्दिश्री ने कहा- ‘आपको भूख लगी होगी। क्या भोजन बनाऊ?’

राजकुमार ने कहा- ‘मैं किसी के यहां भोजन नहीं करता, हां, मेरे पास बत्तीस चावल है यदि उनसे भोजन बना दो, तौ मैं खा लूंगा।’

नन्दिश्री समझ गयी कि राजकुमार उसकी परीक्षा ले रहा है, उसने चावल लेकर कहा- मैं इन्हीं से आपको बहुत अच्छा भोजन बनाकर खिलाऊंगी।’



राजकुमार भोजन खाकर अत्यन्त प्रसन्न हुए। इस तरह राजकुमार और नन्दिश्री दोनों एक-दूसरे के प्रति आसक्त हो गये

नन्दिश्री ने तत्काल उन चावलों को पीसकर पांच गुलगुले बनाए फिर लंबनखी को देकर बोली- 'इन्हें बाजार में जाकर यह कहकर बेचना कि ये वशीकरण -गुलगुले हैं। जिस स्त्री को ये गुलगुले खिलाए जाएंगे, वह वश में हो जाएगी।

लंबनखी ने जाकर वे गुलगुले सौ रुपये में बेच दिये। फिर उन रुपयों से नन्दिश्री ने भोजन सामग्री मंगवाकर उत्तम भोजन तैयार किया। राजकुमार वह भोजन खाकर अत्यंत प्रसन्न हुए। इस तरह राजकुमार और नन्दिश्री दोनों एक दूसरे के प्रति आसक्त हो गए। किंतु सेठ इन्द्रदत्त को इसका पता न था।

सेठ इन्द्रदत्त अपने कक्ष में विचारमग्न बैठे हुए थे। तभी नन्दिश्री वहा आयी। सेठ इन्द्रदत्त ने कहा- 'बेटी! क्या इतने दिनों में तू इस युवराज को जान सकी है कि यह कौन है?'

'पिता जी ! इतना तो जान सकी हूं कि यह किसी उच्चकुल का है। किंतु कहां का रहने वाला है, कौन है, यह उसने आज तक रहस्य ही बना रखा है।

'किंतु इस रहस्य को मैंने जान लिया है। यह मगध का निर्वासित भूतपूर्व युवराज बिंबसार है।

'राजकुमार बिंबसार? पर यहां? इस दशा में क्यों?'

'क्योंकि राजा उपश्रेणिक ने एक भील कन्या से इस शर्त पर विवाह किया था कि वह उसके पुत्र को युवराज बनाएंगे। इसके लिए उन्होंने बिंबसार पर राजद्रोह का झूठा कलंक लगाकर उसे निर्वासित कर दिया है और भील के पुत्र को युवराज बना दिया है।

'यह तो बड़ा अन्याय हुआ है, राजकुमार के साथ। तभी वह अक्सर गुमसुम और सोच में डूबा रहता है।

'बेटी! यह राजकुमार वीर है, धीर गंभीर है। एक न एक दिन वह अवश्य अपना खोया हुआ अधिकार प्राप्त कर लेगा। मैंने अत्यंत गुप्त ढंग से इन बातों का पता लगाया है।

'मैं भी ईश्वर से राजकुमार की सफलता की प्रार्थना करूंगी।'

'बेटी! यदि राजकुमार से तेरा विवाह हो जाय तो मुझे अत्यंत प्रसन्नता होगी। तेरी सहमति तो है न?'

'हां' कहकर नन्दिश्री ने लज्जा से सिर झुका लिया।

अभी रात का पहला पहर ही बीता था। सेठ इन्द्रदत्त राजकुमार बिंबसार के कमरे में गए। वह जाग रहे थे। सेठ इन्द्रदत्त ने कहा- 'राजकुमार बिंबसार! मुझे आपका

असली परिचय मिल गया है। यह भी जानता हूँ कि आप निर्वासित और गुप्त जीवन क्यों बिता रहे हैं।’

‘तब तो मुझे यहां से चला जाना चाहिए।’

‘नहीं राजकुमार! मैं आपकी सफलता चाहता हूँ और आपको सहयोग दूंगा। क्या आप नन्दिश्री से विवाह करेंगे?’

‘यदि नन्दिश्री को स्वीकार हो तो? साथ ही एक शर्त भी है यह विवाह बिना किसी दिखावे के हो और मेरा असली परिचय न दें।’

‘नन्दिश्री को भी आपसे विवाह करना स्वीकार है और आपकी शर्त भी मुझे स्वीकार है। किंतु एक शर्त मेरी भी है। जब तक आप अपने कार्य में सफल नहीं हो जायें, आप यहीं रहें? मैं तन, मन, धन से आपकी हर सहायता करूंगा।’

राजकुमार बिंबसार ने शर्तें स्वीकार कर लीं। फिर खूब धूमधाम से विवाह हुआ। राजकुमार ने सेठ इन्द्रदत्त का घर ही अपनी गुप्त मंत्रणा एवं योजना निर्माण का केन्द्र बना लिया। धीरे-धीरे सेना के संगठन का काम पूरा होने लगा। उधर राजा उपश्रेणिक के बाद राजकुमार चिलाती मगध का राजा बन गया था। किंतु प्रजा उससे बहुत दुःखी थी।

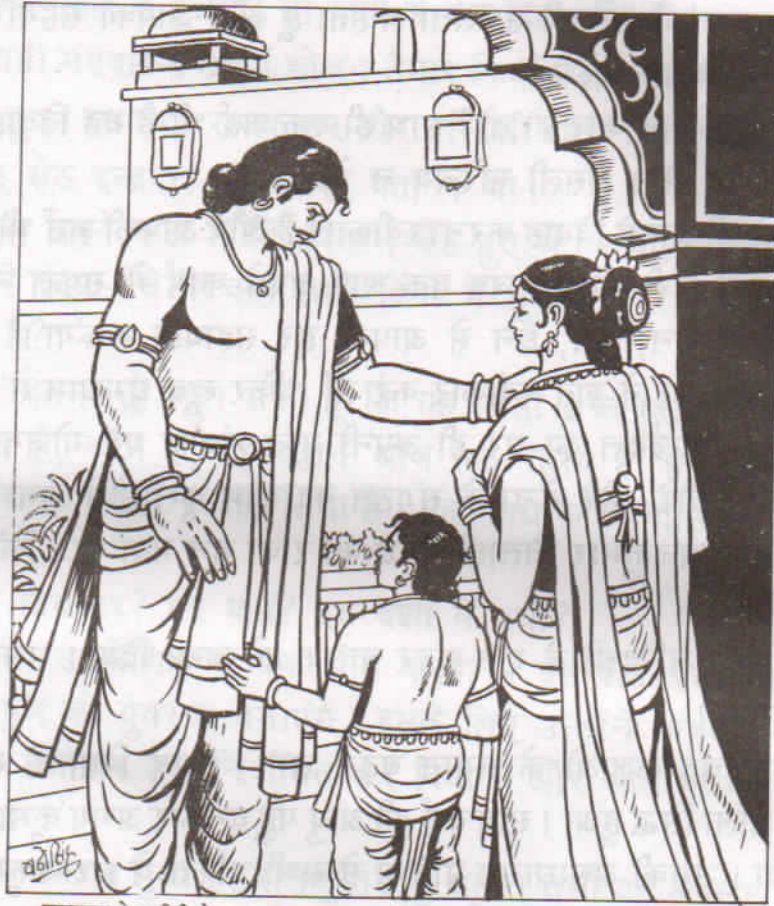
कुछ समय बाद नन्दिश्री ने एक सुंदर बालक को जन्म दिया। उसका नाम रखा था- अभय कुमार।

अभय कुमार चंद्र कलाओं के समान बढ़ने लगा। अपने पिता के समान वह भी अत्यंत प्रतिभा वाला सिद्ध हुआ। सात वर्ष की आयु पहुंचने पर अभय कुमार शस्त्र-विद्या सीखने लगा था। उसकी असाधारण प्रतिभा से सभी चकित थे। राजकुमार ने उसकी शिक्षा की श्रेष्ठतम व्यवस्था कर दी थी।

गिरिव्रज में चिलाती के अत्याचार बढ़ते जा रहे थे। इससे गिरिव्रज के निवासी भी दुखी और असंतुष्ट थे। सेना का प्रत्येक सैनिक चिलाती से घृणा करने लगा था। जनता यह चाहने लगी थी कि किसी प्रकार राजकुमार बिंबसार आएँ और राज्य संभाले, नगर के श्रेष्ठी भी चिलाती को गद्दी से उतारने में सहयोग देने को तैयार थे। वे इसके लिए बड़ी से बड़ी धनराशि देने को तैयार थे।

गिरिव्रज में फैले इस असंतोष के कारण पांच व्यक्तियों का एक प्रतिनिधि-मंडल वेण पद्मनगर गुप्त ढंग से गया। इसमें महामात्य कल्पक, सेनापति भद्रसेन, ब्रह्मचारी वर्षकार, नगरसेठ धनंजय और नगराध्यक्ष कुसुमकांत सम्मिलित थे। इन लोगों ने राजकुमार बिंबसार को राज्य की पूरी स्थिति की जानकारी दी। यही उपयुक्त अवसर

है जबकि आप चढ़ाई करें तो रक्त की एक बूंद बहाए बिना ही राजसिंहासन पर आपका कब्जा हो जायगा। सारी योजना पर विचार करने के बाद राजकुमार बिंबसार ने सहमति दे दी।



राजकुमार ने नन्दिश्री से कहा—तुम इस बालक के साथ यहीं रहो मैं उपयुक्त समय पर तुम्हें वहां बुला लूंगा

अगले दिन राजकुमार ने अपने विश्वासपात्र सैनिकों के साथ गिरिव्रज जाने की तैयारी की। अभय कुमार उस समय सात वर्ष का बालक था। राजकुमार ने नन्दिश्री से कहा— 'तुम इस बालक के साथ यहीं रहो। मैं उपयुक्त समय पर तुम्हें वहां बुला लूंगा।'

गिरिव्रज के लिए राजकुमार बिंबसार ने प्रस्थान किया। सभी जगह उन्हें हर तरह का सहयोग मिला। गिरिव्रज पहुंचने पर उनका स्वागत हुआ। राजमहल में चिलाती सो रहा था। जब राजकुमार बिंबसार अपने सैनिक लेकर वहां पहुंचे तो किसी ने विरोध न किया। चिलाती को ज्यों ही समाचार मिला तो वह डरकर पीछे के दरवाजे

से भाग गया। राजमहल पर बिंबसार का अधिकार हो गया।

अगले दिन राजसभा जुटी, बिंबसार के आते ही राजसभा ने 'राजकुमार श्रेणिक बिंबसार की जय' का नारा लगाया। इसके बाद पूरे विधि-विधान से राज्याभिषेक किया गया।

गिरिव्रज के इस सारे घटनाक्रम की सूचना वेणु पद्मनगर में नन्दिश्री को मिली तो उसकी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा, सेठ इन्द्रदत्त ने खूब खुशियां मनाईं।

राजा बिंबसार ने अगले दिन राज्य-व्यवस्था के बारे में अपने मंत्रियों से वार्तालाप किया। फिर जब नन्दिग्राम के ब्राह्मणों को अतिथि-सेवा के लिए दिये जाने वाले धन का प्रश्न उठा तो बिंबसार कुछ गंभीर हो उठे। उन्होंने कहा- 'मैंने स्वयं नन्दिग्राम जाकर देखा है कि वहां इस धन का सदुपयोग नहीं होता है। राजकोष से यह धन इसलिए दिया जाता है कि उस ग्राम में जाने वाले प्रत्येक नागरिक को मुफ्त भोजन दिया जाय। किंतु वहां के लोग इस धन का उपयोग केवल अपने आदमियों के लिए



राजा बिंबसार ने राज्य व्यवस्था के बारे में मंत्रियों से वार्तालाप किया

करते हैं, और बाहर के अतिथियों को इससे भोजन नहीं दिया जाता, यहां तक कि उन्होंने हमको भी भोजन देने से इन्कार कर दिया था- इसलिए नन्दिग्राम के लोगों की आर्थिक सहायता बंद करके, उन्हें राजदंड देना चाहिए।'

महामात्य वर्षकार ने राजा बिंबसार की इस बात को सुनकर कहा- 'आपकी बात बिलकुल सही है, राजन्! किंतु आप स्वयं सोचें कि सिंहासन पर बैठने के दूसरे ही दिन ऐसा आदेश देना क्या उचित है? आप यदि उन्हें दंड देना ही चाहते हैं तो किसी और तरह से दें जिससे उन्हें इस बात का आभास हो जाय कि राजा हमसे असंतुष्ट हैं।'

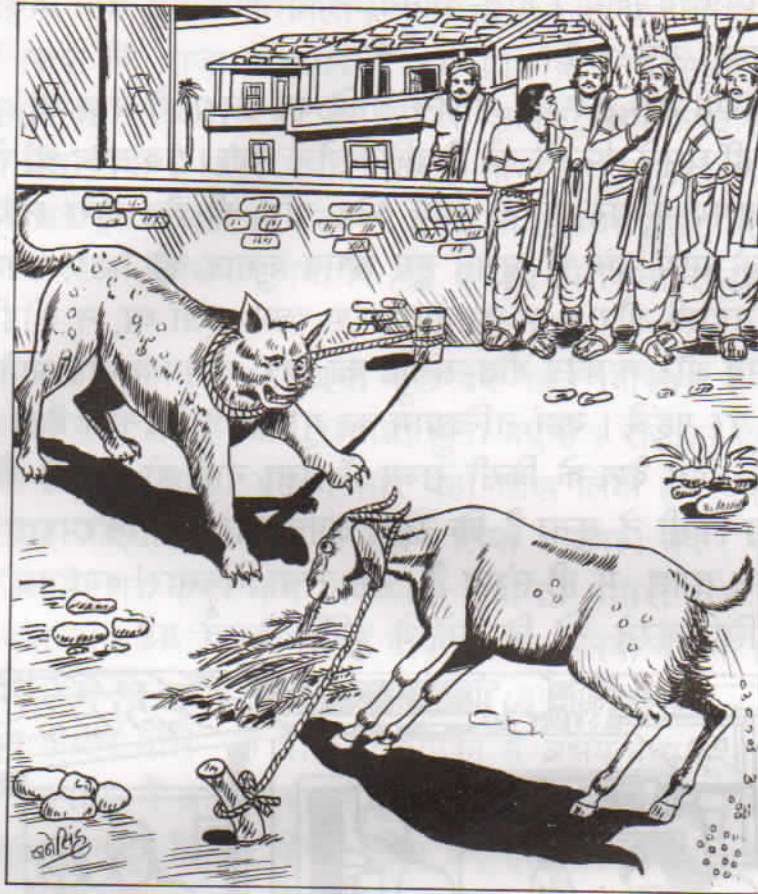
वर्षकार की बात पर बिंबसार ने कुछ सोचा, फिर बोले 'ठीक है आप एक बकरा तोलकर उनके यहां भिजवा दो। साथ ही यह कहलवा दें कि इसको खूब खिलाया-पिलाया जाय। एक सप्ताह बाद बकरे को वापस बुलाकर तोला जायगा। अगर बकरे का भार जरा भी कम या ज्यादा हुआ तो सभी ब्राह्मणों को दंड दिया जायेगा और उनके गांव छीन लिये जायेंगे।

राजा बिंबसार की आज्ञानुसार महामात्य वर्षकार ने एक बकरे को तुलवाया। फिर राजा के निर्देश के साथ उसे नन्दिग्राम भिजवा दिया। जब राजसेवक उस बकरे को लेकर नन्दिग्राम में पहुंचे और उन्होंने राजाज्ञा सुनायी तो ब्राह्मण सकते में आ गए।

तब वहां के मुखिया आगे आए। उन्होंने राजसेवकों से पूछा- 'हे राजपुरुषो! हम ब्राह्मण हैं, ब्राह्मण सभी की सहायता का पात्र होता है। इसलिए आप कृपाकर हमें यह तो बता दें कि इस विपत्ति से छूटने का उपाय क्या है।

राजसेवकों ने कहा- 'हे नन्दिनाथ! हम इसमें आपकी कोई सहायता नहीं कर सकते- क्योंकि हमें तो वह कारण भी नहीं ज्ञात है, जिसने यह राजाज्ञा दिलवाई है। यह आज्ञा तो स्वयं राजा बिंबसार ने दी है। हमारी समझ में तो यही आता है कि आप लोग राजा बिंबसार को प्रसन्न करें। वही आपको इस विपत्ति से मुक्त कर सकते हैं। इसके अलावा कोई दूसरा उपाय नहीं है।'

राजसेवक वह बकरा नन्दिनाथ को सौंपकर चले गए। साथ ही एक सप्ताह बाद उसे लौटा ले जाने की बात कहकर चले गए। इस बीच नन्दिग्राम वासियों को उस बकरे को खूब खिलाना-पिलाना था, साथ ही यह भी ध्यान रखना था कि वह बकरा न दुबला हो, न मोटा हो। उसका भार वही रहे, जो इस समय है। इस विचित्र समस्या का क्या हल हो सकता है, किसी की समझ में न आ रहा था। वे तो बस एक ही बात समझ पा रहे थे कि उन पर राजा बिंबसार का कोप टूट पड़ा है। इस कारण



आप इस बकरे को खूब खिलाएँ पिलाएँ केवल शाम को इसे एक भेड़िये के सामने बांध दिया करें...

उनके हृदय शोक से भर गए थे। और सबसे दुखदायी बात तो यह थी कि राजा का यह कोप अभी न जाने कितने रूपों में प्रकट हो। इसलिए नन्दिग्राम के हर नागरिक का चेहरा दुःख और चिंता से कुम्हला गया था।

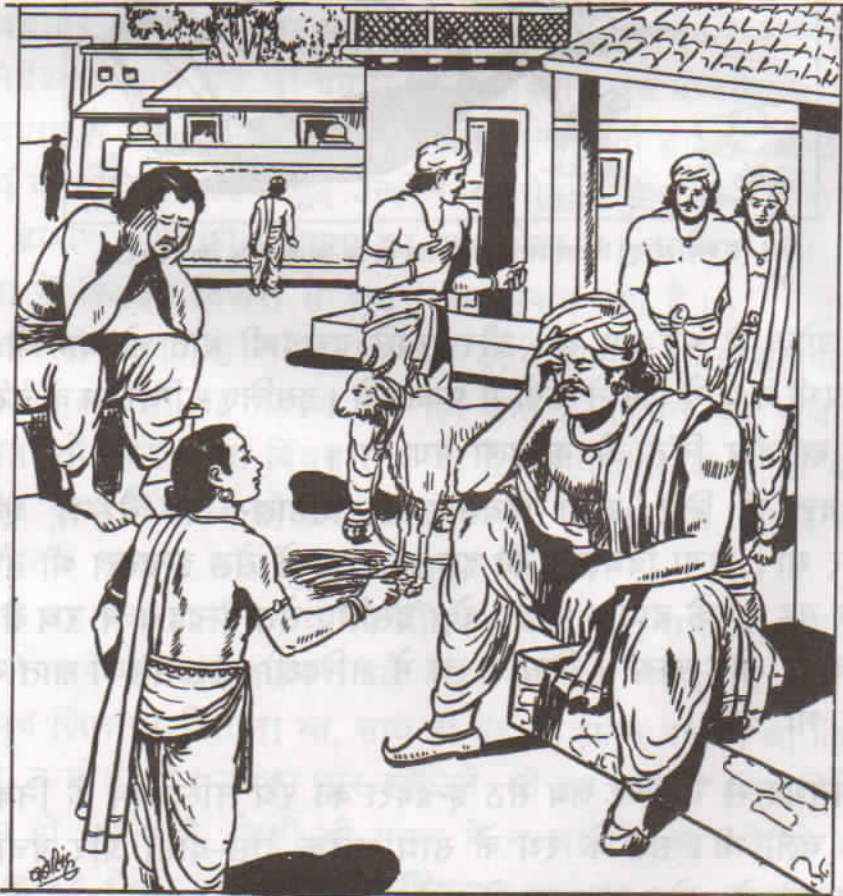
सेठ इन्द्रदत्त के लिए, राजा बिंबसार का सिंहासन पर बैठना, एक अत्यंत शुभ-समाचार था। राजा बिंबसार की इस सफलता में सेठ इन्द्रदत्त भी तो सहयोगी बने थे। फिर वह उसके दामाद भी तो थे। इसलिए सेठ इन्द्रदत्त ने रथ तैयार किया और गिरिव्रज की ओर प्रस्थान किया। रथ में नन्दिश्री और उसका सात वर्षीय पुत्र अभय कुमार भी चला।

वेण पद्मनगर से चलकर जब सेठ इन्द्रदत्त का रथ नन्दिग्राम के निकट पहुंचा तो संध्या हो चली थी। सेठ के रथ के साथ अनेक दास-दासी और पचास सैनिक भी साथ चल रहे थे। सेठ इन्द्रदत्त ने अंधेरा होते देखकर नन्दिग्राम के बाहर ही

डेरा डालने का निश्चय किया। दास-दासियों ने तत्काल तंबू लगा दिए और सैनिक चारों ओर से पहरा देने लगे।

जबकि एक तरफ उस डेरे पर भोजन आदि का प्रबंध हो रहा था, बालक अभय कुमार का मन कहीं घूमने-फिरने को विचलित होने लगा। तब नन्द श्री ने दौ सैनिकों से कहा कि वे अभय कुमार को ले जाएं और गांव की सैर करा लाएं।

दो सैनिकों के साथ गांव में घूमते हुए अभय कुमार को बड़ा आश्चर्य हुआ कि चारों ओर वहां उदासी और दुःख का वातावरण छाया हुआ था, न कोई चहल-पहल थी, न कोई उत्सव और न कोई गीत-संगीत का स्वर, अभय कुमार आगे बढ़ते-बढ़ते गांव की चौपाल पर पहुंचे। यहां नन्दिग्राम का मुखिया नन्दिनाथ बैठा रो रहा था। वह कह रहा था- 'इस देश के किसी राज्य में ऐसा नहीं हो रहा है जैसा मगध में हो रहा है। भला किसी ने सुना है कि राजा अपने राज्य के निरपराध ब्राह्मणों को दंड दे। यह केवल मगध में ही संभव है। वह राजा बिंबसार! क्या हम तुम्हारे आने की प्रतीक्षा इसीलिए करते रहे कि हमें ये दुर्दिन देखने पड़े।



नन्दि ग्राम के हर नागरिक का चेहरा दुःख और चिन्ता से कुम्हला गया था

अभय कुमार ने नन्दिनाथ का विलाप सुना तो उसका मन दुःख से भर गया। वह समझ नहीं पाया कि राजा बिंबसार ने इस ग्राम के निवासियों को क्या कष्ट दिया है और क्यों! वह नन्दिनाथ के पास आए। 'आपको क्या कष्ट है? भला राजा ने आपको क्या दंड दिया है और क्यों?' अभय कुमार ने पूछा।

नन्दिनाथ ने जब इस बालक को देखा तो पहले तो आश्चर्य हुआ, किंतु फिर उसके साथ दो सैनिक देखकर वह समझ गया कि वह अवश्य ही किसी राजघराने से आया है।

नन्दिनाथ ने कहा- 'हे राजपुत्र! अभी कुछ देर पहले गिरिव्रज से दो राजसेवक आए थे। वे यह बकरा दे गए हैं और राजाज्ञा सुना गए हैं। राजाज्ञा यह है कि बकरे को खूब खिलाया-पिलाया जाय। इसका भार वहां लिख लिया है। एक सप्ताह बाद यह बकरा गिरिव्रज जाएगा जहां फिर से वजन लिया जाएगा। बकरे का भार अगर वहीं हुआ तो ठीक है, पर अगर कम या ज्यादा हुआ तो हमारी खैर नहीं। हमें न केवल राजदंड दिया जायगा बल्कि हमसे यह गांव भी छीन लिया जायगा। हमारी समझ में नहीं आता कि इस राजकोप से बचने का क्या उपाय करें।

इस पर अभय कुमार बोले- 'हे ब्राह्मण! आपको मैं अभय देता हूं। आप राजकोप से तनिक भी न घबराएं, मैं आपको इस समस्या का उपाय बताता हूं। आप इस बकरे को दिन भर खूब खिलाएं-पिलाएं केवल शाम को इसे एक भेड़िए के सामने बांध दिया करे। बस फिर देखिए क्या होता है।'

राजकुमार बालक से ऐसा सहज उपाय सुनकर ग्रामवासी अत्यंत प्रसन्न हुए उन्होंने अभय कुमार से कहा- 'यदि आपने हमें अभय दिया है तो हमारी विनती भी सुन लें। इस राजकोप का अंत न समझें। निश्चय ही राजा बिंबसार बकरे के बाद कोई और समस्या भेजेंगे। उसे कौन हल करेगा? इसलिए हमारी आपसे हाथ जोड़कर विनती है कि जब तब हम पर यह राजकोप है, आप नन्दिग्राम में ही रहें।

अभय कुमार ने कहा- 'हे ब्राह्मणो! जब मैंने आपको अभय दिया है तो उसकी रक्षा भी मैं ही करूंगा। आप निश्चिंत रहें। जब तक आपका कष्ट नहीं मिट जाता, मैं यहां से नहीं जाऊंगा। मैंने गांव के बाहर अपना शिविर बनाया है।'

अभय कुमार अब वापिस शिविर में आया, उसने माता नन्दिश्री को सारी घटना सुना दी। माता नन्दिश्री बहुत प्रसन्न हुई, वह बोली- 'बेटा, तुमने अभयदान दिया है तो उसकी रक्षा तो होनी ही चाहिए। मैं तुम्हारे वचनपालन में सहयोगी बनूंगी। हम तब तक नन्दिग्राम से नहीं जाएंगे, जब तक यहां के लोगों के दुःख दूर न हो जायें।

उधर नन्दिनाथ ने वही किया जो अभय कुमार ने बताया था। नन्दिनाथ को जब यह पता चला कि अभय कुमार राजा बिंबसार का पुत्र है तो उसके मन में कुमार के प्रति अत्याधिक आदर एवं प्रेम भाव जागृत हो उठा। उसने गांव की धर्मशाला खाली करवा दी और जाकर सेठ इन्द्रदत्त से प्रार्थना की कि वे सब धर्मशाला में आकर रहें। सेठ इन्द्रदत्त ने यह अनुरोध स्वीकार कर लिया और धर्मशाला में आकर रहने लगे।

एक सप्ताह बाद राजसेवक नन्दिग्राम आए और बकरा वापस ले गए। उसको तौला गया तो वह उतना ही निकला जितना उसे भेजा गया था। राजा बिंबसार के लिए यह एक आश्चर्य जनक समाचार था। उन्होंने नन्दिग्राम के लोगों को दंड देने के लिए दूसरा उपाय सोचा।

अबकी बार राजसेवक नन्दिग्राम पहुंचे और उन्होंने राजा बिंबसार का ऐसा विचित्र आदेश सुनाया कि सबके दिमाग चकरा गए। उन्होंने कहा- 'राजा ने कहा है कि अपने नन्दिग्राम की बावड़ी गिरिव्रज भेज दो। यदि एक सप्ताह में बावड़ी न आयी तो समस्त नन्दिग्रामवासियों को दंड दिया जायगा।

नन्दिनाथ और उसके साथियों ने जब आदेश सुना तो समझ गए कि अब उन्हें राजदंड से कोई नहीं बचा सकता, क्योंकि इस बार राजा ने एकदम असंभव कार्य करने को कहा है। इसे तो राजकुमार अभय कुमार भी नहीं हल कर पाएंगे। फिर भी मन में विश्वास की किरण लिए वे लोग अभय कुमार के पास आए और उन्हें नयी समस्या की जानकारी दी। वे इतने निराश और दुःखी थे कि चुपचाप सिर झुकाकर बैठ गए।

अभय कुमार ने पूछा- 'आप लोग इस आदेश से इतना घबराए हुए क्यों हैं?'

'क्योंकि यह कार्य असंभव है?' नन्दिनाथ ने कहा।

'असंभव शब्द अभय कुमार ने नहीं जाना। ऐसा करो कि आपके गांव में जितनी गाय भैंस, बैल आदि हों, सबको इकट्ठा करो। इतनी बड़ी संख्या में इकट्ठा करो कि यहां से गिरिव्रज तक उनही पंक्ति बन जाय। उनके कंधों पर जुआ रखवा देना। फिर उन्हें रस्सियों से बांधकर जोड़ देना। गिरिव्रज उस समय पहुंचना जब राजा बिंबसार सो रहे हों। राजमहल में जाकर शोर करना कि 'महाराज ने बावड़ी मंगवाई थी। उसे खींचकर यहां लाया जा रहा है। महाराज जल्दी बतावें कि बावड़ी कहाँ रखनी है?'

नन्दिनाथ ने बात समझ ली। अगले दिन वही किया गया। आधी रात के बाद सारा गिरिव्रज जानवरों के शोर से गूंज उठा। उन्हें ऐसे हांक रहे थे जैसे वे कोई



महाराज ने बावड़ी मंगवायी थी। उसे खींचकर यहां लाया जा रहा है। जल्दी बतावें कि बावड़ी कहां रखनी है?

भारी चीज़ खींच रहे हों। शोर सुनकर महाराज बिंबसार की नींद खुल गयी। उन्होंने पूछताछ की तो द्वारपाल ने बताया कि नन्दिग्राम से वहां के लोग, आपकी आज्ञानुसार बावड़ी खींचकर लाए हैं और पूछ रहे हैं कि उसे कहां रखें?' महाराज पूरी तरह जागे न थे, सो बोले- 'जहां से लाए हैं, वहीं ले जाकर उसे रख दें ओर यहां से जाएं शोर न करें।'

राजा बिंबसार की यह आज्ञा जैसे ही नन्दिग्राम वासियों को सुनायी गयी- वे खुश होकर नन्दिग्राम लौट गए। उन्होंने अभय कुमार की बुद्धि का लोहा मान लिया।

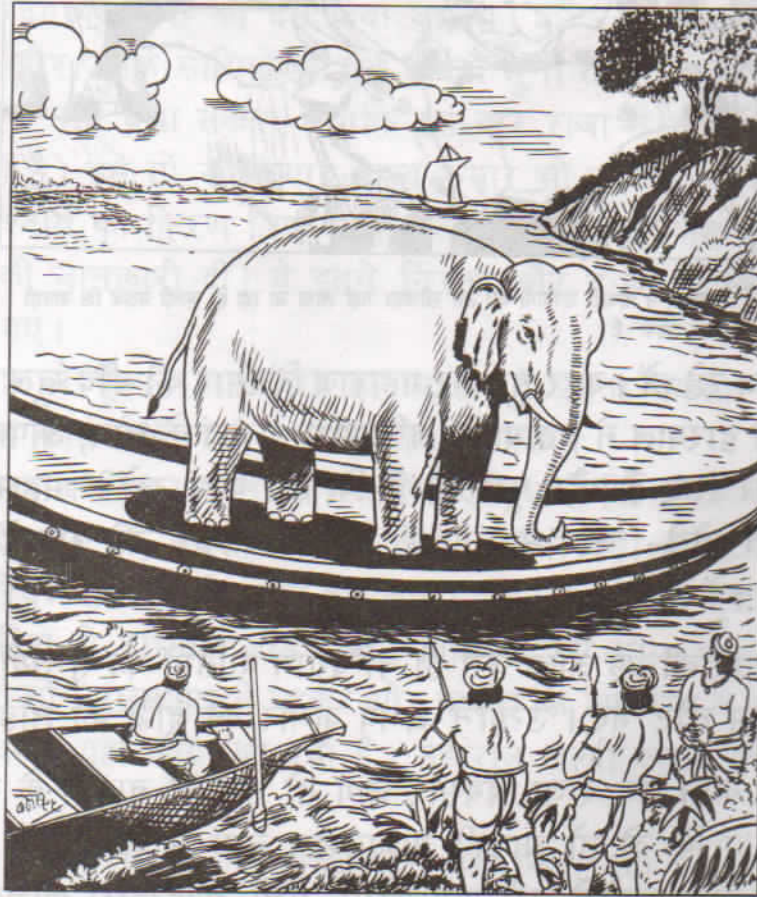
किंतु प्रातः काल जब राजा बिंबसार जागे तो उन्होंने बावड़ी के बारे में पूछा। द्वारपाल ने कहा कि वो तो आपकी आज्ञानुसार जहां से लायी गयी थी, वहीं भेज दी गयीं। फिर जब उन्होंने उसे गाय, भैंसों, बैलों आदि द्वारा खींचकर लाए जाने की बात सुनी तो समझ गए कि इस बार फिर नन्दिग्राम वासियों ने उन्हें अपनी

बुद्धि से हरा दिया है। किंतु बिंबसार हार मानने वाले न थे। उन्होंने फिर एक नयी आज्ञा जारी कर दी, 'नन्दिग्राम जाकर वहां के लोगों से कहो कि वे शीघ्र ही गांव के हाथी का वजन करके मेरे पास भेज दें।'

राजसेवक को नन्दिग्राम की ओर आते देखकर नन्दिनाथ समझ गया कि फिर कोई मुसीबत आ रही है, राजसेवक ने निकट आकर जब राजा का आदेश सुना तो नन्दिनाथ और उनके साथियों के चेहरे कुम्हला गए। ऐसा लगा जैसे उनके खुश रहने के दिन बीच चुके हैं। हर क्षण एक न एक समस्या सिर पर सवार रहने लगी थी।

वे अभय कुमार के पास गए नयी राजाज्ञा सुनायी। फिर चिंतित होकर बोले- 'आप ही बताइए कुमार! क्या हाथी का तोलना संभव है। भला इतना बड़ा तराजू कहां से आएगा। फिर हाथी उस तराजू में कैसे चढ़ेगा?'

'यह आपकी चिंता का विषय नहीं है नन्दिनाथ, मैंने आपको अभयदान दिया है।



उस नाव पर हाथी सवार कर दिया

मैं अभी हाथी का भार आपको बता दूंगा।’

अगले दिन एक नाव लेकर अभय कुमार नदी किनारे पहुंचे। उस नाव पर हाथी सवार कर दिया। इससे नाव का जितना हिस्सा पानी में डूबा, उसमें निशान लगा दिया। अब हाथी को उतारकर नाव में पत्थर भरे जाने लगे। इतने पत्थर भर गए कि नाव उस निशान तक डूब जाय। इसके बाद उन पत्थरों को तोल लिया गया। अब उन पत्थरों को हाथी के भार के साथ महाराज बिंबसार को भेज दिया गया। उन्होंने जब हाथी के भार को देखा तो चकित रह गए। कुछ देर सोचकर उन्होंने राजसेवक को बुलाकर एक लकड़ी दी। बोले-‘इसे नन्दिग्राम ले जाओ। कहना महाराज जानना चाहते हैं कि इस लकड़ी का सिरा और पिछला कौन-सा है। यदि हमें सही उत्तर न मिला तो पूरा गांव राजदंड भोगेगा।’

इस बार जब राजसेवक आता दिखा तो नन्दिनाथ ने साथियों से कहा- लगता है महाराज हमें सताने पर तुले हुए हैं। वह किसी न किसी तरह हमें पराजित करके ही चैन लेंगे। फिर भी, जब तक हमें अभयकुमार का अभयदान प्राप्त है, तब तक तो प्रयत्न करना ही चाहिए।’

नन्दिनाथ चौपाल से उठे और वह लकड़ी लेकर अभय कुमार के पास पहुंचे। अभय कुमार ने कहा- यह तो कोई समस्या ही नहीं है। आइए मेरे साथ वह उन्हें तालाब के पास ले आए। उन्होंने वह लकड़ी पानी में डाल दी तो बहने लगी। अभय कुमार ने कहा- जिस तरफ का हिस्सा आगे को बह रहा है, वही इसका अगला भाग है और दूसरा हिस्सा पिछला भाग है। आप जाकर यह उत्तर राजा बिंबसार को बता सकते हैं।

नन्दिग्राम के ब्राह्मणों ने राजदरबार में पहुंचकर राजा बिंबसार के प्रश्न का उत्तर दे दिया था। इससे राजा को थोड़ी खीझ हुई। उन्होंने एक सेवक के हाथ में कुछ दाने तिल के रख दिए, बोले- ‘नन्दिग्राम के ब्राह्मणों को ये तिल देना और कहना, महाराज का आदेश है कि इन तिलों के बराबर ही इनका तेल निकालकर भेजें। यदि आज्ञा का पालन न हुआ तो परिणाम उन्हें मालूम हैं।’

नन्दिनाथ को जब यह आदेश मिला तो वह परेशान हुआ, अपने साथियों को लेकर वह फिर अभय कुमार के पास पहुंचा। अभय कुमार ने उन तिलों को एक दर्पण पर फैला दिया। फिर उन्हें नन्दिनाथ को देकर कहा- अब जाकर इनका जितना तेल निकले, निकलवा लाओ। नन्दिनाथ तेल निकलवा लाए तो जितने स्थान पर तिल फैलाए गए थे, उतने में उस तेल को फैलाकर नन्दिनाथ को दे दिया। अभय कुमार ने कहा- ‘अब इसे महाराज के पास गिरिव्रज भिजवा दो।’

बिंबसार के सामने तेलयुक्त दर्पण आया तो वह चकित रह गए। उन्हें लगा कि इन ब्राह्मणों में अवश्य ही कोई अत्यंत बुद्धिमान व्यक्ति है। अस्तु उसकी परीक्षा लेनी चाहिए। उन्होंने राजसेवक को बुलाकर कहा- 'तुम इसी समय नन्दिग्राम जाओ। हमारा आदेश सुनाओ कि महाराज ने भोजन योग्य दूध मंगाया है। किंतु वह दूध न तो चार थन वाले पशु जैसे गाय, भैंस का हो, न बकरी आदि दो थन वाले का हो। नारियल या किसी फल का न हो। किंतु मीठा हो, स्वादिष्ट हो और बहुत-सा हो।'

राजसेवक ने नन्दिग्राम पहुंचकर महाराज बिंबसार का आदेश सुना दिया। इस विचित्र दूध की बात सुनकर लोग घबरा गए। उनके समझ में न आया कि दूध किस प्रकार का हो? आखिर महाराज क्या चाहते हैं जो हर बार एक नयी उलझन खड़ी कर देते हैं? वे यही सब सोचते हुए फिर से अभय कुमार के पास पहुंचे, जब उन्होंने अपनी समस्या बतायी तो अभय कुमार ने कहा- 'दूध और भी कई तरह से बनता है। आप कच्चे धान की बालें मंगवाकर उन्हें पिसवा लें, उनका उत्तम दूध बनेगा। धान इतनी मंगवाएं कि तीन-चार घड़े दूध बन जाये।'

नन्दिनाथ ने वैसा ही किया। दूध बनाकर महाराज बिंबसार को भेजा गया। उन्होंने उसे पिया तो वह अत्यंत स्वादिष्ट और मीठा लगा। पर वह तो परीक्षा लेने लगे थे। उन्होंने फिर से राजसेवक भेजा और कहलवाया कि हमारे सामने एक मुर्गे को लड़ाकर 'मुर्गे की लड़ाई' दिखाएं, नन्दिग्राम के लोगों ने सुना तो उन्हें हंसी आ गयी कि कहीं एक मुर्गे से, मुर्गे की लड़ाई दिखा सकते हैं? किंतु राजा की आज्ञा थी और असंभव को संभव करके दिखाना था। वह शक्ति केवल अभय कुमार में थी। अभय कुमार के पास जाने पर उन्होंने कहा- 'आप केवल एक ही मुर्गा लेकर जाइये। साथ में एक दर्पण ले जाइए। उसमें मुर्गे को उसी की तस्वीर दिखाकर उसे लड़वा दीजिए।'

बात तो ठीक थी। बस नन्दिग्राम वासी राजदरबार में उपस्थित हुए और एक मुर्गा लड़ाकर दिखा दिया। महाराज बिंबसार एक मुर्गे की लड़ाई देखकर चकित रह गए।

नन्दिग्राम वासियों के जाने के बाद महाराज बिंबसार समझ नहीं पा रहे थे कि इन लोगों को कैसे पराजित किया जाय! लगता है इनमें से कोई बहुत बुद्धिमान है। फिर भी उन्होंने परीक्षा लेने का निश्चय किया। इस बार उन्होंने नन्दिग्राम संदेश भिजवाया कि बालू की रस्सी बनाकर भेजें निःसंदेह यह असंभव कार्य था और अभय कुमार जैसे चतुर बुद्धि वाले के लिए भी हल कर पाना असंभव था। अस्तु इस बार

ग्रामवासी बड़े निराश मन से अभय कुमार के पास पहुँचे उनके झुके हुए सिर और उदास चेहरे देखकर अभय कुमार समझ गया कि इस बार कोई कठिन समस्या है। फिर भी उसने उनकी हिम्मत बंधाई तो वे बोले- 'हमें मालूम है कि इस बार आप भी हमारी मदद नहीं कर सकते। क्या कभी बालू से रस्सी बन सकती है?'

'जानता हूँ, इस बार प्रश्न एकदम ही टेढ़ा है किंतु घबराने की बात नहीं है। इसका भी एक सीधा जवाब है!'



एक मुर्गा लड़ाकर दिखा दिया

'क्या? बालू से रस्सी बन सकती है?' नन्दिनाथ खुशी से चिल्लाया!

'नहीं नन्दिनाथ उपाय यह है कि तुम महाराज के पास जाओ, उनसे कहो कि हम रस्सी बनाना तो जानते हैं, पर पहले एक बार बनी बनाई वैसी ही रस्सी दिखा दें। आपके खजाने में तो होगी।'

यह उपाय बहुत अच्छा था। ब्राह्मणों ने जाकर बिंबसार से बालू की रस्सी बतौर नमूने के-देखने को मांगी। अब तो बिंबसार अपने ही जाल में फँस गए थे। अंत में उन्हें कहना ही पड़ा- 'ठीक है बालू की रस्सी न बनाओ' यह आदेश सुनते ही

नन्दिग्राम के लोग खुशी-खुशी वापस गांव में आ गए।

किंतु राजसेवक तो पीछे-पीछे ही पहुंच गया। उसके पास फिर एक कठिन सवाल था। नन्दिग्रामवासी इन कठिन परीक्षाओं से तंग और दुखी हो चुके थे। वे अभय कुमार के पास आए और बोले— हे राजकुमार! हम तो महाराज की इन परीक्षाओं से दुखी हो उठे हैं। हमें एक पल का भी चैन नहीं है। ऐसा लगता है कि जब महाराज हमें नन्दिग्राम से हटा नहीं देंगे, वह शांत नहीं होंगे। इसलिए अच्छा यही है कि हम यहां से चले जाएं।

नन्दिनाथ के इन दुःखभरे शब्दों को सुनकर अभय कुमार ने उन्हें धैर्य रखने के लिए कहा। फिर उस नयी समस्या के बारे में पूछा जो अब उनके सामने थी। नन्दिनाथ ने बताया कि महाराज ने एक ऐसा सफेद कद्दू मंगवाया है जो घड़े के आकार का हो और उसी में बंद हो।

‘यह कोई कठिन कार्य नहीं है। अच्छी जाति के सफेद कद्दू के बीज लाइए।



अच्छी जाति के सफेद कद्दू के बीज लाईये उन्हें खाद पानी देकर उगाइये फिर उसका फल घड़े में डाल दीजिये

उन्हें खाद पानी देकर उगाइए। फिर उसका फल घड़े में डाल दीजिए। ताकि वह उसी में बढें, पूरा कद्दू होने पर घड़ा महाराज को भेज दीजिए।’

नन्दिग्राम वासियों ने उसी तरह कद्दू उगाया और फल तैयार होने पर वह घड़ा महाराज को भिजवा दिया।

महाराज बिंबसार देख रहे थे कि वे कठिन से कठिन समस्या नन्दिग्राम भेजते हैं। वहां से वह बड़ी सुगमता से हल होकर आ जाती है। इसके पीछे कोई रहस्य अवश्य है। वह इस रहस्य को जानने के लिए उत्सुक हो उठे। तब उन्होंने कुछ बुद्धिमान व्यक्तियों को बुलाया और कहा- ‘आप लोग नन्दिग्राम जायं। वहां गुप्तरिति से पता लगाएं कि वह कौन व्यक्ति है जो हमारे कठिन प्रश्नों के उत्तर देता है।

गिरिव्रज के बुद्धिमान की टोली जब नन्दिग्राम पहुंची तो वहां एक बाग में अभय कुमार कुछ लड़कों के साथ खेल रहे थे। वह दूर से ही देखकर उन लोगों को पहचान गए। उन्होंने लड़कों से कहा- ‘अब जरा खेल हो जाए! वह लोग इधर आ रहे हैं। इस बाग के मीठे फल देखकर उनका मन ललचाएगा। पर कोई, उन्हें फल नहीं देगा। जैसा मैं कहूं वैसा करना।



तो जरा गरम फल खिलाओ न?

वे सब पेड़ों पर चढ़ गए। इधर बुद्धिमानों की टोली बाग में पहुंची थके और भूखे तो थे ही, मीठे फल देखकर मन ललचा गया। एक व्यक्ति ने कहा— 'ए लड़कों! क्या तुम लोग हमारे लिए कुछ फल तोड़कर दे सकते हो?'

उत्तर दिया अभय कुमार ने— हां... हां.... पर हमारे पास दो तरह के फल हैं। एक गरम दूसरे ठंडे। कैसे फल खाएंगे आप?'

'अच्छा? ऐसी बात है? जो जरा गरम फल खिलाओ न?' अभय कुमार जामुन के पेड़ पर चढ़े थे। वह वहीं से बढ़िया पकी हुई जामुन तोड़-तोड़कर गिराने लगे। राजा के आदमी उन्हें उठाने लगे। किंतु खाने के पहले उन फलों में लगी धूल को फूंक-फूंककर झाड़ने भी लगे। तभी ऊपर से अभय कुमार ने कहा— 'देखा, गरम फल है न! तभी तो फूंक-फूंककर खा रहे हो।'

'अच्छा तो अब ठंडे फलों का आनंद लेने दो।' अब अभय कुमार ने उन्हें कच्चे जामुन तोड़कर दिये।

राजपुरुषों ने बालक अभय कुमार की बुद्धि चतुराई, उसके मुख पर राजसी तेज और साहस को देखा तो उन्हें यह समझने में देर न लगी कि यही वह व्यक्ति है जो नन्दिग्राम के लोगों की सहायता करता है। यह भी कि इस बालक को नन्दिग्राम का नहीं होना चाहिए। फिर जब वे नन्दिग्राम वासियों से मिले तो उन्हें सभी बातों का विस्तार से पता चल गया।

राजपुरुष गिरिव्रज लौटकर आए और उन्होंने महाराज बिम्बसार से अभय कुमार के बारे में सारी बातें बता दी। बिम्बसार मन ही मन अत्यंत प्रसन्न हुए। उन्हें यही आशा थी कि उनका पुत्र भी उनके जैसा ही तेजस्वी और बुद्धिमान बनेगा। किंतु दूसरे ही क्षण उन्होंने सोचा कि अभय कुमार से सीधे-सीधे मिलने में कोई बात न होगी। पिता-पुत्र यदि एक दूसरे को चुनौती देकर मिलें तो इस मिलन का आनंद ही कुछ और होगा।

राजपुरुष और मंत्रिगण तो यह सोच रहे थे कि वात्सलय भाव में डूबकर पिता बिम्बसार, अभय कुमार से मिलने के लिए बेचैन हो उठेंगे। सही भी है, ऐसे प्रतिभावान, तेजस्वी बेटे से भला कौन पिता मिलने के लिए उत्सुक न होगा। किंतु बिम्बसार अत्यंत गंभीर मुद्रा में कुछ सोचते रहे। फिर महामात्य वर्णकार से बोले— 'आप इसी समय एक राजसेवक को नन्दिग्राम भेजिए। उससे कहिए कि वह अभय कुमार को गिरिव्रज आने के लिए हमारी ओर से आमंत्रित करे। किंतु यह शर्त भी बता दें कि वह न तो मार्ग से आए, न उपमार्ग से, न दिन में आए, न रात में, न भूखे आए, न पेट भर कर आए, न किसी सवारी में आए, न पैदल, किंतु गिरिव्रज

बड़ी शीघ्रता से आए।

राजसेवक ने तत्काल नन्दिग्राम के लिए प्रस्थान किया। वहाँ पहुँचकर उसने अभय कुमार को राजा का आदेश सुना दिया।

जब नन्दिग्राम वासियों को पता चला तो वे दुखी हो उठे। एक तो यह कि अब राजा के कोप से उनकी रक्षा कौन करेगा। दूसरे अभय कुमार किस प्रकार शीघ्रता से गिरिव्रज पहुँचेंगे? अभय कुमार ने उन्हें शांत किया कि अब नन्दिग्राम पर कोई मुसीबत नहीं आएगी। इसके बाद उन्होंने अपने नाना सेठ इन्द्रदत्त से कहा कि सेवकों और सैनिकों से कहिए कि वे गिरिव्रज चलने की तैयारी करें।



रथ में एक ओर छींका बंधवा दिया और उस पर स्वयं बैठ गये

संध्या समय अभय कुमार ने एक रथ में एक ओर छींका बंधवा दिया और उस पर स्वयं बैठ गए। रथ का एक पहिया सड़क पर था, दूसरा सड़क के किनारे वाली जमीन पर। उन्होंने चने का आधा पेट भोजन किया था। सेठ इन्द्रदत्त और नन्दिश्री अलग रथों पर थे। वे लोग शीघ्र ही गिरिव्रज पहुँच गए।

गिरिव्रज में अभय कुमार के आने का समाचार फैल चुका था। अस्तु समस्त नगरवासी उनके स्वागत के लिए सड़कों पर खड़े थे। हर ओर भीड़ ही भीड़ थी।

अपने प्रिय राजकुमार की झलक देखने को वे बेचैन थे।

अभय कुमार अपने नाना सेठ इन्द्रदत्त के साथ राजदरबार में पहुंचे। राजदरबार आज विशेष रूप से सजा हुआ था। सभी को राजकुमार अभय कुमार की प्रतीक्षा थी। अभय कुमार ने सभा में आकर पिता बिंबसार के चरण छुए तो उन्होंने बेटे को उठाकर हृदय से लगा लिया।

‘कहिए पिता जी! आपने जो शर्तें रखी थीं, उन्हें पूरा करके ही मैं आया हूँ न?’

‘हां बेटा! मैं अत्यंत प्रसन्न हूँ।’

अभय कुमार को उचित आसन पर बिठाया गया। अभय कुमार ने कहा- पिता जी! मैं आपसे एक प्रार्थना करना चाहता हूँ।’

‘कहो, निःसंकोच होकर कहो!’

‘नन्दिग्राम वासियों से अनजाने में जो अपराध हुआ हो, उसके लिए उन्हें क्षमा कर दें।’

‘तुमने प्रार्थना की है तो मैं उन्हें अवश्य ही क्षमा कर रहा हूँ। किंतु वे इस बात का ध्यान रखें कि उनके यहां अतिथि-शाला में, भोजन कराने में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं होना चाहिए। अतिथि तो है ही वह जिसके आने की तिथि निश्चित न हो, फिर वह चाहे राजकर्मचारी हो या कोई सामान्य व्यक्ति।

‘महाराज! हम अपने इस अपराध के लिए बार-बार क्षमा मांगते हैं।’ नन्दिनाथ को वह घटना याद हो आयी थी कि वह तो स्वयं राजकुमार बिंबसार थे। मैंने उस समय आपको पहचाना नहीं था। अब कभी ऐसी भूल न होगी।

‘ठीक है! जाओ! तुम्हें पहले जैसी ही राज-सहायता मिलेगी और तुम्हारे सब अधिकार वापस किए जाते हैं।’

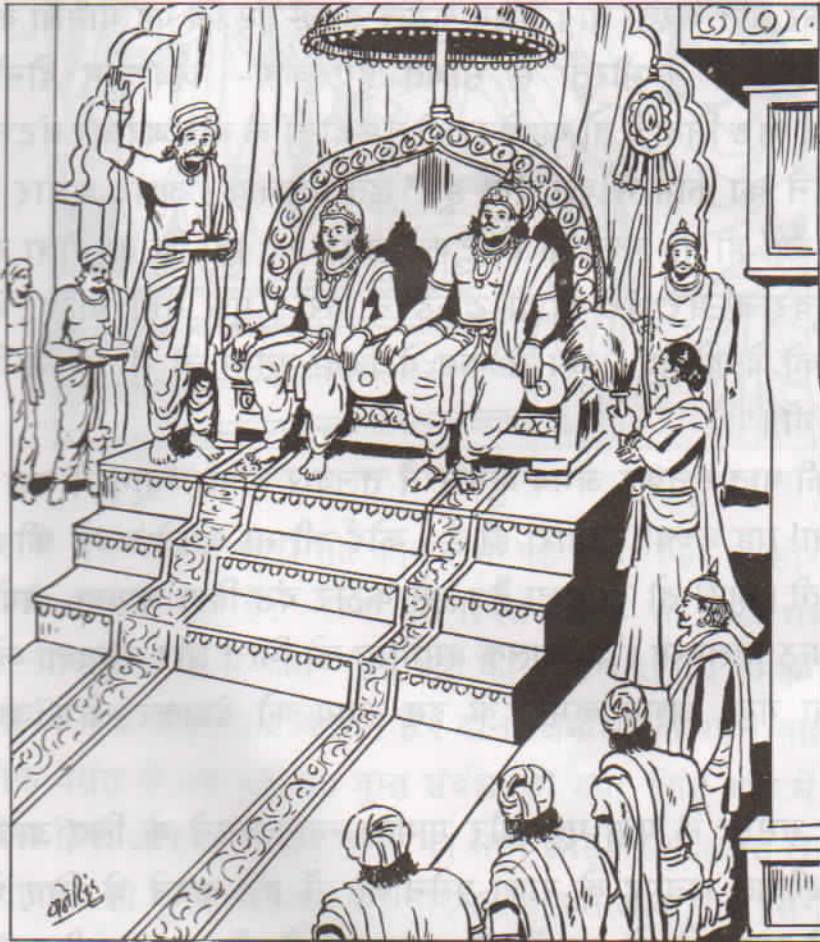
‘सम्राट बिंबसार की जय’ नन्दिग्राम वासियों ने जय घोष किया- ‘राजकुमार अभय कुमार की जय।’

अभय कुमार के आने से गिरिव्रज में खुशी ही वर्षा हो रही थी। महाराज ने उन्हें युवराज पद देने की घोषणा कर दी थी। राजदरबार विशेष रूप से सजाया गया था। सभी मंत्री, सभासद एवं जनता के प्रतिष्ठित लोग वहां उपस्थित थे। महाराज बिंबसार और अभय कुमार के दरबार में उपस्थित होने पर समारोह की कार्यवाही शुरू हो गयी।

महामात्य वर्षकार ने सभा को संबोधित करते हुए कहा- ‘सभासद सुने! यह हमारे परम सौभाग्य की बात है कि हमारे बीच राजकुमार अभय कुमार उपस्थित हैं। उनके

गुणों की चर्चा में किस प्रकार करूँ, समझ में नहीं आता। वह गुणी, बुद्धिमान, साहसी, शस्त्र संचालन में कुशल- अत्यंत पराक्रमी हैं। नन्दिग्राम के ब्राह्मणों की रक्षा करने में उन्होंने अपनी बुद्धि चातुरी का जो परिचय दिया है, उससे सभी चकित रहे हैं। उन्होंने अपनी विलक्षण प्रतिभा से हम सबका हृदय जीत लिया है। उनके सर्वगुण संपन्न होने के कारण यह उचित ही होगा कि हम उन्हें युवराज बनाएं। आशा है आप लोग इस प्रस्ताव से सहमत होंगे। यदि किसी को यह प्रस्ताव ठीक न लगे तो वह अपनी बात कह सकता है।'

युवराज अभय कुमार का यशगान चारों ओर होने लगा। वह नगर में जिधर भी जाते लोग पुष्प वर्षा करके स्वागत करते और जय-जयकार करते। राजसभा में भी युवराज अभय कुमार अनेक गूढ़ प्रश्नों को सुगमता से हल कर देते थे। वह न्यायप्रिय, धीर-गंभीर और प्रजापालक युवराज के गुणों से पूर्ण थे।



यह हमारे परम सौभाग्य की बात है कि हमारे बीच राजकुमार अभय कुमार उपस्थित है।

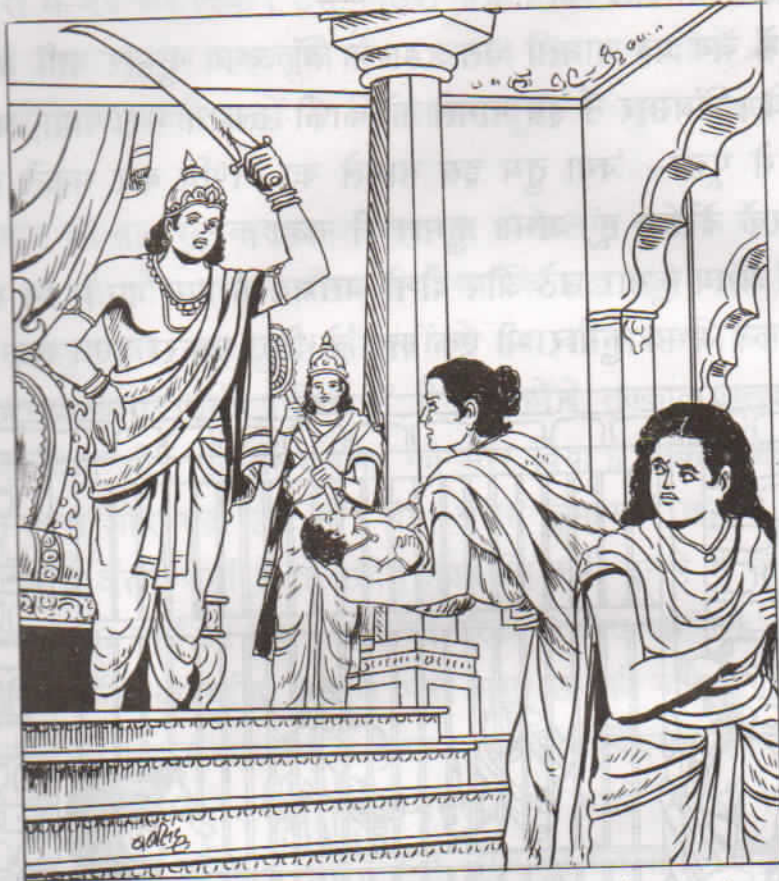
गिरिव्रज में एक सेठ रहता थे— सुभद्र दत्त उनके दो पत्नियां थीं— वसुमित्रा और वसुदत्ता। सेठ सुभद्र दत्त का अचानक निधन हो गया। उसके एक पुत्र था, किंतु वह अभी छोटा था। दोनों पत्नियों ने अलग रहने का फैसला किया। इसलिए सुभद्र दत्त की सारी संपत्ति दो भागों में बांट दी गयी। किंतु लड़के के मामले को लेकर दोनों पत्नियां झगड़ने लगीं। एक कहती— यह मेरा बेटा है, दूसरी कहती मेरा है। बंटवारा करने वाले पंच चक्कर में पड़ गए। सोचने लगे कि यह कैसे निर्णय होगा कि बेटा वास्तव में किसका है। होते-होते बात राजदरबार तक पहुंच गयी। सम्राट बिंबसार ने कहा— 'इस मामले को युवराज के पास ले जाओ। वही इसे सुलझाएंगे।'

अब दोनों महिलाएं अभय कुमार के सामने उपस्थित हुईं साथ में वह लड़का भी था। वसुमित्रा ने कहा— 'यह बेटा मेरा है, यह मेरी कोख से पैदा हुआ है', वसुदत्ता बोली— 'ये झूठ बोलती है। बेटा तो मेरा है। बेटे से पूछा तो वह दोनों से मां... मां कहकर बात करता था। अभय कुमार समझ गए कि यह मामला काफी गहरा है। इसलिए उन्होंने गम्भीरता से सोचते हुए कहा— 'जब तुम दोनों ने धन बराबर-बराबर बांट लिया है तो यह बेटा भी तुम दोनों के बीच बराबर बंटना चाहिए। चलो इसे बांटने का काम मैं कर देता हूं।' इतना कहकर अभय कुमार ने तलवार निकाली और ज्यों ही वह बच्चे के दो टुकड़े करने को हुए कि वसुमित्रा रोने लगी। वह बोली— 'युवराज! मेरे बेटे के दो टुकड़े न करो। मुझे नहीं चाहिए मेरा बेटा। इसे वसुदत्ता को दे दीजिए। कम से कम ये जिंदा रहेगा तो मैं दूर से देखकर ही संतोष कर लूंगी।'

वसुमित्रा की बात सुनकर अभय कुमार ने तलवार वापस म्यान में रख ली। फिर बोले— वसुमित्रा! यह बच्चा तुम्हारा ही है। कोई भी मां अपने बच्चे की हत्या होते नहीं देख सकती। झूठी तो वसुदत्ता है। इसे कठोर दंड दिया जायगा— क्योंकि इसने हमारे सामने झूठ बोला था। वह बालक वसुमित्रा को मिला और वसुदत्ता को कारगार में डलवा दिया गया, अभय कुमार के इस न्याय को देखकर लोग जय-जयकार कर उठे।

इसके बाद सम्राट के पास एक और मामला न्याय करने के लिए आया। बताया गया कि इसे कौशल जनपद के राजा प्रसेनजित ने हल करने के लिए भेजा। यह मामला एक ही शक्ल के दो पुरुषों और एक स्त्री के बीच था। स्त्री उन दोनों में

से पहचान नहीं कर पा रही थी कि उसका पति कौन है? जबकि वे दोनों ही उसको अपनी पत्नी बता रहे थे। प्रार्थिनी पत्नी ने कहा- 'महाराज, इस दुविधा में मेरा जीवन बरवाद कर दिया है। कृपया आप निर्णय करें।'।



जब तुम दोनों ने धन बराबर बांट लिया तो यह बेटा भी बंटना चाहिए, चलो यह काम मैं कर देता हूँ....

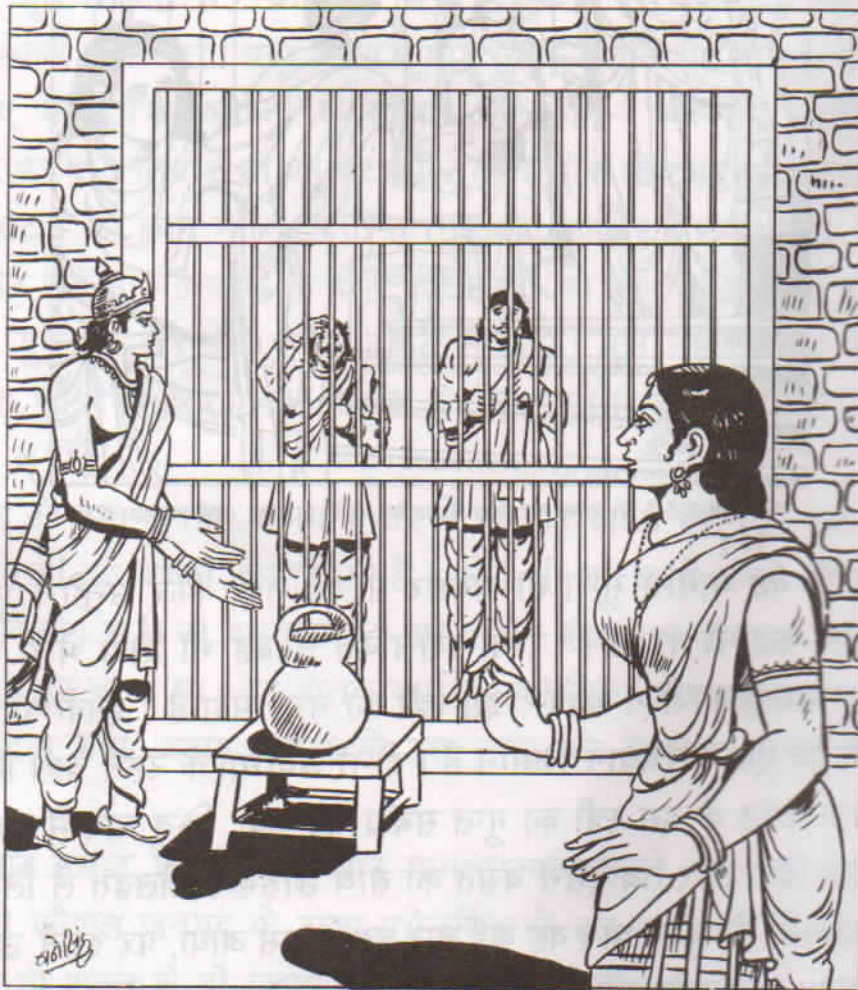
बिंबसार ने यह मामला सुना तो चक्कर में पड़ गए। फिर उन्होंने पूछा- 'इसे पूरे मामले की कहानी क्या है?' राजा प्रसेनजित ने वह भी लिख भेजा था। अस्तु उसे पढ़कर न्यायाधिकारी ने कहा- 'इस स्त्री का नाम भद्रा है। इसके पति का नाम बलभद्र है जो कि एक चरित्रवान किसान है। दोनों अयोध्या के रहने वाले हैं, अयोध्या के एक धनिक वसंत के इस स्त्री का गुप्त संबंध हो गया, किंतु बाद में एक महात्मा ने इसे उपदेश दिया और तब इसने वसंत का साथ छोड़कर शीलव्रत ले लिया। वसंत इसके लिए दीवाना हो चुका था। वह कई बार इसके पास आया, पर इसने उसे दुत्कार कर भगा दिया। तब वसंत पागल हो गया और सड़कों पर घमने लगा। कुछ समय

बाद वसंत अयोध्या से कहां चला गया, कोई नहीं जानता। किन्तु एक दिन अचानक एक व्यक्ति बिल्कुल बलभद्र जैसा रूप रखकर आया और असली बलभद्र को घर से निकालने लगा। बस तभी से यह झगड़ा चल रहा है और यह निश्चित नहीं हो पा रहा है कि असली बलभद्र कौन है?’

राजसभा में जब यह मामला चल रहा था तो अभय कुमार वहीं बैठे सारी बातें देख सुन रहे थे। बिंबसार ने इस मामले को काफी उलझन भरा पाया, अंत में उन्होंने अभय कुमार से पूछा— ‘क्या तुम इस मामले का निर्णय कर सकते हो।’

प्रयत्न करके देखता हूं, अभय कुमार ने कहा।

इसके बाद अभय कुमार उठे और दोनों बलभद्र के पास गए। उन दोनों का रूप एक जैसा देखकर अभय कुमार भी एक क्षण के लिए चकरा गए। तब उन्होंने भद्रा



तुम में से जो कोई फाटक छड़ों से निकल कर तूँबी में घुम जायेगा उसे ही भद्रा मिलेगी

को बुलाकर बलभद्र के शरीर के निशान तथा अन्य सूक्ष्म बातें पूछीं। इनकी जांच करने पर भी यह निश्चय करना कठिन हो रहा था कि असली कौन है।

अभय कुमार सोचने लगे कि क्या किया जाए? अंत में उन्होंने दोनों बलभद्रों को एक कोठरी में बंद कर दिया। उस कोठरी के द्वार पर लोहे की छड़ों वाला फाटक लगा था। अब अभय कुमार एक तूंबी लेकर आए। फिर उन दोनों से बोले— 'तुममें से जो कोई भी फाटक की छड़ों से निकलकर तूंबी में घुस जायगा, उसे ही भद्रा मिलेगी।

अभय कुमार की बात सुनकर असली बलभद्र रोने लगा क्योंकि ऐसा करना उसके वश की बात न थी और इसका सीधा अर्थ था कि भद्रा उसे नहीं मिलेगी। उधर नकली बलभद्र खुश था। वह तुरंत सीखचों से हवा की तरह निकला और तूंबी में घुस गया। अभय कुमार इसी प्रतीक्षा में थे। उन्होंने तत्काल तलवार निकालकर तूंबी को तोड़ दिया और नकली बलभद्र को मार दिया। इसके बाद असली बलभद्र को बाहर निकाला और भद्रा उसे सौंप दी। अभय कुमार ने कहा— 'जब मैंने देखा कि दोनों में कोई अंतर नहीं है तो संदेह हुआ कि कहीं इनमें से कोई एक मायावी रूप धारण करके तो नहीं आ गया। इसी की परख के लिए यह नाटक करना पड़ा।'

अभय कुमार की न्यायबुद्धि देखकर पूरी सभा उनकी जय-जयकार कर उठी।

इस प्रकार अभय कुमार राजसभा में बैठकर, महाराज बिंबसार की अनेक समस्याओं को सुलझाने में मदद करते। वह राज्यव्यवस्था के कार्यों में भी हाट बंटाने लगे थे। सबको समानता का व्यवहार मिले। ऊंच-नीच का भेदभाव न हो। सब धर्माचरण पर चलें। सबको भोजन मिले, काम मिले, इन कुछ सिद्धांतों को लेकर अभय कुमार ने व्यवस्था और प्रशासन इस ढंग से चलाया कि जनता में सुख की लहर दौड़ गयी। भ्रष्ट और अत्याचारी अधिकारियों पर अभय कुमार की खास नजर रहती थी। उन्हें कड़ा से कड़ा दंड दिया जाता था। साथ ही अभय कुमार दयालु प्रकृति के भी थे। प्रजा के दुःख-सुख में बराबरी से सम्मिलित होते थे। ज्यों-ज्यों उनकी उम्र बढ़ रही थी अनुभव बढ़ रहा था, वह उतने ही लोकप्रिय और कर्तव्यनिष्ठ बनते जा रहे थे।

युवक अभय कुमार अत्यंत सुंदर, आकर्षक एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व वाले हो गए थे। सुंदर सुडौल गौर शरीर, मुख पर कांति और स्वभाव में सरलता, अभय

कुमार ने राजकाज इस तरह संभाल रखा था कि महाराज बिंबसार और महामात्य वर्षकार के सामने भी बहुत कम समस्याएं प्रस्तुत होती थीं।

किंतु युवराज अभय कुमार कुछ दिनों से देख रहे थे कि महाराज बिंबसार का स्वास्थ्य ठीक नहीं है। वह कुछ उदास और खोए-खोए से रहते हैं। पूछने पर भी बिंबसार ने अभय से कुछ न कहा। वैद्यों और चिकित्सकों ने भी महाराज की परीक्षा की, पर कोई रोग न निकला। अभय कुमार ने जब उन लोगों से अलग से बात की तो उन्होंने कहा- 'महाराज को शरीरिक रोग तो नहीं, हां मानसिक रोग अवश्य है। वह किसी चिंता में खोए रहते हैं। उस चिंता का कारण क्या है, कौन है, इसका पता तो युवराज आप ही लगा सकते हैं।'

अभय कुमार ने इस दिशा में बहुत सोचा, बहुत से लोगों से बातें कीं। किंतु कोई निष्कर्ष न निकला। कुछ समय पहले भरत नामक एक चित्रकार गिरिव्रज में आकर रहने लगा था। वह वैशाली से आया था। महाराज बिंबसार कभी-कभी उसके भवन



उन्हें तो एक ही चित्र पसन्द है वेलना का

में चित्र देखने जाया करते थे। अभय कुमार ने सोचा कि भरत को बुलवाकर भी पूछ लिया जाय।

अगले दिन चित्रकार भरत अभय कुमार के सामने उपस्थित हो गया। बातों-बातों में अभय कुमार ने कहा- 'आपके चित्रों ने तो हमारे महाराज के हृदय में भी चित्रकला के प्रति अनुराग जगा दिया है। यह बड़ी प्रसन्नता की बात है।'

'यह तो मेरा सौभाग्य है कि महाराज मेरे चित्रों की सराहना करते हैं। वह कई बार मेरी चित्रशाला में आकर कई-कई घंटे बिता चुके हैं भरत ने कहा।

'क्या महाराज को कोई विशेष चित्र पसंद है?'

'हां, उन्हें तो एक ही चित्र पसंद है और उसी को वह विभिन्न मुद्राओं में बनवाकर देखा करते हैं।'

'वह किसका चित्र है?'

'बज्जी गणतंत्र के राजा चेटक की सबसे छोटी पुत्री चेलना का चित्र है युवराज!'

अभय कुमार के सामने अब स्थिति स्पष्ट हो गयी थी। वह समझ गए थे कि महाराज बिंबसार राजकुमारी चेलना पर आसक्त हैं। उनकी चिंता का कारण शायद यही है कि राजकुमारी चेलना को कैसे प्राप्त करें? यदि प्राप्त करें तो क्या युवराज अभय कुमार के होते हुए ऐसा करना उचित होगा? अभय कुमार ने सारी स्थितियों पर विचार किया। फिर वह महामात्य वर्षकार से विचार-विमर्श के लिए चल पड़े।

महामात्य वर्षकार से अभय कुमार ने कहा- 'मैं आपके पास कुछ गुप्त मंत्रणा करने आया हूं। इस वाक्य को सुनकर महामात्य वर्षकार पहले तो चौंके फिर धैर्य रखकर बोले- 'कहिये युवराज! ऐसी कौन सी समस्या आ गयी है?'

'आप देख रहे हैं कि इन दिनों पिताश्री उदास और चिंतित रहते हैं। क्या आपने इसका कारण समझा है?'

'हां युवराज! उनकी चिंता का कारण वैशाली की राजकुमारी का वह चित्र है जो उन्हें चित्रकार भरत ने दिखाया है। जबसे वह चित्र महाराज ने देखा है, ऐसा लगता है जैसे वह अपना सब कुछ लुटा बैठे हों। महामात्य वर्षकार ने कहा।

'किंतु इस समस्या का उपाय क्या है? अभय कुमार ने पूछा।

'उपाय तो यही है युवराज, कि राजकुमारी चेलना उन्हें मिल जाय। पर यह अत्यंत कठिन कार्य है। इसका कारण यह है कि वैशाली गणतंत्र का गणपति राजा चेटक

जैन धर्म का पालन करता है। वह हमसे घृणा करता है। ऐसी स्थिति में विवाह-संबंध का प्रस्ताव भेजना व्यर्थ है। महामात्य वर्षकार ने कहा।

‘आपकी बात सही है महामात्य! किंतु निराश होकर बैठना भी तो उचित नहीं है। यदि किसी तरह वैशाली से राजकुमारी चेलना का अपहरण कर लिया जाय तो?’ अभय कुमार ने कहा।

‘यह असंभव है युवराज! इससे युद्ध भड़क सकता है और मैं पड़ोसी राज्यों से युद्ध करने के पक्ष में नहीं हूँ।’ महामात्य ने कहा, ‘आपको संभवतः वैशाली के दुर्ग का अनुमान नहीं है। उसके अंदर घुसने वाला पक्षी भी सरलता से बाहर नहीं निकल सकता। फिर आप चेलना का अपहरण कैसे करेंगे?’

यह आप मुझ पर छोड़ दीजिए। केवल आप मेरी सहायता कीजिए, ताकि मैं अपनी योजना में सफल हो सकूँ। अभय कुमार ने कहा।

‘किंतु इस कार्य के लिए वैशाली कौन जाएगा?’

‘मेरे अतिरिक्त कौन जायगा?’ अभय कुमार ने कहा।

‘किंतु आप ऐसा करके अपने प्राण संकट में डालेंगे।’

‘उसकी चिंता न करें महामात्य। मैं दुर्ग के अंदर गए बिना ही चेलना को लेकर सुरंग मार्ग से आ जाऊंगा।’ अभय कुमार ने कहा।

‘पर आपको किसी ने पहचान लिया तो?’

‘मैं रत्नों के व्यापारी के रूप में जाऊंगा। जैन धर्म पालक बनूंगा और तब अपनी योजना आरंभ करूंगा।’

‘वाह युवराज! आप धन्य हैं, आपकी योजना अवश्य सफल होगी। फिर भी मेरा परामर्श है कि आप यह कार्य अत्यंत गुप्त रीति से करें। क्योंकि थोड़ी सी भी शंका से प्राण तक जा सकते हैं।’

‘उसकी चिंता न करें, आप तो किसी बहाने से मुझे पिताजी से अनुमति दिलवाइए ताकि मैं वैशाली जा सकूँ।’

‘वह कौन सी कठिन बात है। मैं उन्हें समझा दूंगा कि युवराज मैत्री-संबंध, बनाने के लिए वैशाली जा रहे हैं।’

‘तब मैं कल ही प्रस्थान करूंगा।’ अभयकुमार ने कहा।

‘किंतु उससे पहले मैं कुछ गुप्तचर वैशाली भेज देता हूँ ताकि वे आपकी सहायता

करें और किसी भी संकट से सावधान रखें।'

अगले दिन दोपहर बाद युवराज अभय कुमार हीरों के व्यापारी का वेश बनाकर वैशाली के लिए चल दिए। उनके साथ कुछ ऐसे लोग भी रत्नों के व्यापारी बनकर चले, जिन्हें वास्तव में हीरों और रत्नों की अच्छी पहचान थी। ये लोग अपने साथ हीरे व रत्न लेकर भी गए थे।

वैशाली पहुंचकर हीरों का यह व्यापारी दल पहले वहां के जौहरियों से मिला और इस प्रकार नगर में यह चर्चा होने लगी कि हीरों के व्यापारी आए हैं। अभय कुमार ने राजा चेटक को पत्र लिखा कि महाराज, हमारे पास बहुमूल्य हीरे व रत्न हैं। हमें नगर में ठहरने के लिए कोई उपयुक्त स्थान नहीं मिल रहा जहां हम अपने को सुरक्षित अनुभव करें। कृपया हमें कोई सुरक्षित स्थान प्रदान करें। वहां रहकर हम कुछ समय तक व्यापार करेंगे फिर चले जाएंगे। राजा चेटक ने उनकी विनय स्वीकार कर ली। उन्हें दुर्ग के निकट ही एक सुरक्षित भवन दे दिया।

अभय कुमार अपने साथियों को लेकर वहां रहने लगा, अभय कुमार के साथ गुप्त रीति से आए सेवक भी वहां आ गए जो सुरंग खोदने का काम करने लगे। इसके साथ ही ये लोग जैन सेठों से मिलते। जिनालयों में जाकर दान देते, पूजापाठ करते- इससे उनकी ख्याति फैल गयी। फिर वहीं पर अभय कुमार ने एक सुंदर चैत्यालय बनवा लिया और रोज सुबह-शाम वहां पूजा करने लगे। कुछ ही समय में हीरों के व्यापारीप सेठ रत्नप्रकाश बने। अभय कुमार ने जैन धर्म संबंधी अपनी भक्ति के झंडे गाड़ दिये। हालांकि यह सब दिखावा था, राजकुमारी चेलना का अपहरण करने की योजना का एक भाग था।

प्रातः काल जब चैत्यालय में अभय कुमार पूजापाठ और भजन आदि करते तो उन सबकी आवाज पास ही स्थित दुर्ग के अन्दर जाती। दुर्ग में रहने वाले सभी लोग इन मधुर स्वरों को सुनते।

एक दिन राजा चेटक की बड़ी लड़की ज्येष्ठा, चैत्यालय में गाए जा रहे भजनों का आनंद ले रही थी। तभी छोटी बेटी चेलना भी आ गयी। वह सुमधुर संगीत चेलना ने भी सुना। दोनों बहुत देर तक भाव-विभोर होकर उस भक्ति-संगीत में खोयी रहीं। जब संगीत बंद हुआ तो ज्येष्ठा ने कहा- चेलना! ये जो भी व्यक्ति है, इसकी पूजा और भजन में भाव-विभोर बना देने वाली शक्ति है।



वह सुमधुर संगीत चेलना ने भी सुना बहुत देर तक भाव विभोर होकर भक्ति संगीत में खोयी रही

‘ठीक कह रही हो बहन! मैं भी यही बात कितने ही दिनों से अनुभव कर रही हूँ। जी चाहता है, चलकर उसके चैत्यालय में भगवान के दर्शन करूँ और भजन-संगीत में शामिल होकर आनंद लूँ।’

‘तूने तो मेरे मन की बात कह दी। पर वह अपरिचित कैसा? फिर मिलेंगे तो परिचय ही हो जायगा। वह कोई राक्षस तो नहीं भगवान का भक्त ही तो है।’ चेलना के इस तर्क पर ज्येष्ठा निरुत्तर हो गयी।

अगले दिन प्रातः काल जैसे ही चैत्यालय में भजन-संगीत की लहरियाँ उठने लगीं, ज्येष्ठा और चेलना, अपने महल से निकलकर अभय कुमार के चैत्यालय में आ गयीं। रत्नप्रकाश जौहरी का वेश बनाए अभय कुमार ने जब उन्हें देखा तो मन ही मन प्रसन्न हुआ कि उसकी साधना की पहली सीढ़ी सफल हुई, चैत्यालय में चल रहा

भजन संगीत अत्यंत सुमधुर और भाव-विभोर करने वाला था। दोनों बहनों ने वहां आसन ग्रहण किया। अभय कुमार जब अधिक जोर-जोर से भक्ति-पूजा में जुट गया। तब उस दिन का कार्यक्रम समाप्त हुआ तो दोनों बहनें उठकर जाने लगीं। अभय कुमार ने आगे बढ़कर उनसे पूछा— ‘आपको चैत्यालय कैसा लगा?’

‘अति सुंदर! अत्यंत आनंददायी!’ चेलना ने कहा।

‘आपने इसे यहीं बनवाया है?’ ज्येष्ठा ने पूछा?

‘भवन तो यहीं का है, किंतु मूर्ति, पूजन-सामग्री और यह भजन-संगीत राजगृह से लाया हूं। अभय कुमार ने कहा।

‘अच्छा आप राजगृह से आए हैं!’ चेलना ने पूछा।

‘जी हां!’

‘किंतु आपको प्रतिष्ठित प्रतिमा साथ रखने में बड़ी कठिनाई होती होगी, क्योंकि इसके लिए तो अत्यंत कठोर नियमों का पालन करना पड़ता है।’

‘धर्म के लिए यदि जीवन का उत्सर्ग भी करना पड़े तो कम है राजकुमारी जी इसमें कष्ट कैसा?’

‘आप सच्चे जिन-भक्त हैं।’

‘और आपका भी जिनधर्म में अच्छा अध्ययन है।’ अभय कुमार ने कहा,

‘आपका भक्ति संगीत अत्यंत मनमोहक है। ऐसी भक्ति, ऐसा संगीत तो पहले हमने कभी नहीं सुना देखा। आप अपना परिचय दीजिए। राजगृह कहा है? वहां के राजा कौन हैं? वह किस धर्म का पालन करते हैं?’

अभय कुमार ने तब जंबू द्वीप का ऐसा सुंदर वर्णन किया कि दोनों राजकुमारियां मंत्र-मुग्ध होकर सुनती रहीं, वे कुछ देर के लिए कल्पनालोक में खो गयीं। मानों वे वहीं विहार कर रहीं हों। अभय कुमार ने उनकी इस अवस्था का सहज ही अनुमान लगा लिया। तब उन्होंने राजा बिंबसार के सौंदर्य, पराक्रम जिन-भक्ति आदि का वर्णन किया। वह वर्णन इतना प्रभावशाली था कि वे दोनों राजकन्याएं मन ही मन चाहने लगीं कि यदि राजा बिंबसार से हमारा विवाह हो जाय तो अच्छा हो।

चेलना ने कहा— ‘हे श्रेष्ठ व्यापारी! आपने अपने जिस राजा का ऐसा मोहक वर्णन किया है, वह हमारे लिए व्यर्थ है, क्योंकि हम उसे पा नहीं सकेंगे।’

अभय कुमार ने आश्चर्य से कहा— ‘क्या तुम सचमुच उन्हें पाना चाहती हैं? यदि

आप इस बात को पूरे मन और बुद्धि से कह रही हैं तो मैं ऐसी विद्या जानता हूँ कि आपको न केवल राजगृह पहुंचा दूँ, बल्कि आपकी मनोकामना भी पूर्ण हो जायगी।'

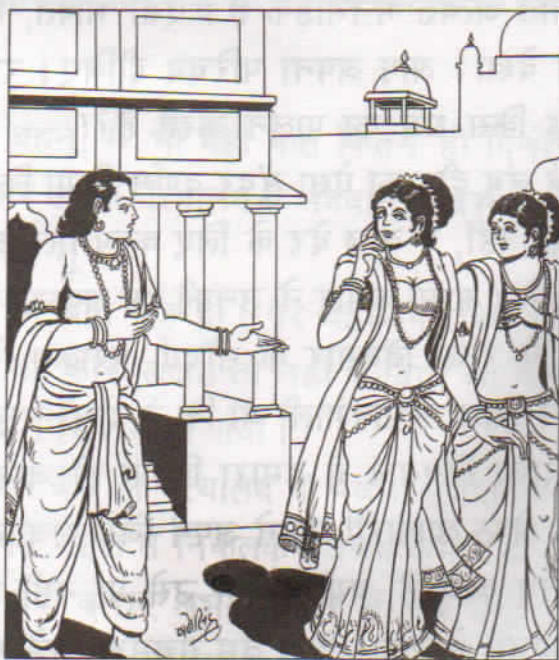
'यदि आप हमारी मनोकामना पूर्ण करने में सहयोगी बन सकते हैं तो हमें अवश्य ही प्रसन्नता होगी। बताइये हमें क्या करना होगा। ज्येष्ठा ने कहा।

'तो आप दोनों, मेरे साथ इस सुरंग मार्ग से चलें। णमोकार मंत्र का पाठ करें, आपका कार्य सिद्ध होगा।'

इस समय तक वह सुरंग मार्ग बनकर तैयार हो चुका था। अस्तु अभय कुमार दोनों राजकुमारियों को लेकर उधर चल दिया। तभी ज्येष्ठा ने कहा- 'हे श्रेष्ठ पुरुष! आप चेलना को लेकर चलें। मैं अपना रत्नहार लेकर आती हूँ। वह मुझे अत्यंत प्रिय है।' ज्येष्ठा तो चली गयी, किंतु चेलना वहीं रह गयी। अभय कुमार चेलना को लेकर सुरंग मार्ग में प्रवेश कर गया।

कुछ ही समय बाद अभय कुमार राजकुमारी चेलना को लेकर राजगृह पहुंच गया। महाराज बिंबसार को जब यह समाचार मिला तो उनकी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। उन्होंने बड़े धूमधाम से राजकुमारी चेलना का स्वागत राजमहल में किया।

फिर बिंबसार और चेलना का विवाह हुआ। युवराज अभय कुमार के प्रयत्न से यह कार्य पूर्ण देखकर महामात्य वर्षकार ने आकर उन्हें विशेष बधाई दी। युवराज!



तो आप दोनों, मेरे साथ इस सुरंग मार्ग से चलें।

अपने असंभव को संभव कर दिखाया है। आपकी जय हो, इसके बाद तो वैशाली और मगध राज्यों में भी मित्रता स्थापित हो गयी।

महारानी चेलना और बिंबसार का जीवन सुखमय बीतने लगा था। किंतु चेलना को जब यह पता लगा कि महाराज बिंबसार जैन धर्म के अनुयायी नहीं हैं तो वह बहुत दुखी हुई। एक दिन जब वह उदास बैठी हुई थी तो बिंबसार ने पूछा- 'क्या बात है चेलना? मैं देख रहा हूँ कि कुछ समय से तुम उदास और चिंतित हो। ऐसी क्या बात है जो मैं महाराज होकर नहीं कर सकता।' चेलना ने कहा- 'यदि आप आज्ञा दें तो मैं कुछ निवेदन करूँ। किंतु यह भी वचन दें कि आप उससे क्रुद्ध नहीं होंगे।'।

'कहो चेलना! हम वचन देते हैं कि तुम्हारी बात यदि कड़वी भी हुई तो भी हम सुनेंगे।' बिंबसार ने कहा।

'तो महाराज! वैशाली में युवराज अभय कुमार ने आपका गुणगान करते हुए कहा था कि आप जैन-धर्म पालक है। किंतु उन्होंने यह बात झूठ कही थी। मुझे इसी बात का दुःख है कि मुझसे छल किया गया। 'महारानी! अब तो जो हो गया, सो हो गया। किंतु आपकी जिन-भक्ति में मैं कोई बाधा नहीं डालूँगा। आप पूर्ण स्वतंत्र हैं और जिन-भक्ति के लिए जो भी सुविधाएं चाहिए, उन्हें मैं उपलब्ध करा सकूँगा।'।

'यह तो ठीक है महाराज, किंतु आप जिन-धर्म पालक नहीं है, मेरी इच्छा थी कि मैं विवाह उसी से करूँगी जो जिन धर्म पालक हो।'।

'महारानी! मैं जिन-धर्म में आस्था नहीं रखता, क्योंकि मुझे उसकी शक्ति पर विश्वास नहीं है, पर मैं तुम्हें तो नहीं रोक रहा। जिस तरह मैं तुम्हें अपना धर्म-पालन करने की स्वतन्त्रता दे रहा हूँ, उसी प्रकार मैं भी स्वतंत्र हूँ।'।

कुछ समय की बात है, महाराज बिंबसार वन में शिकार खेलने गए। वहां उन्होंने यशोधर नामक एक जैनमहामुनि को पद्यासन में ध्यान-मग्न देखा। बिंबसार ने इससे पहले किसी जैन मुनि को नहीं देखा था। उन्हें लगा कि यह कोई ढोंगी साधु है, इसलिए अपने शिकारी कुत्ते मुनि की ओर छोड़ दिए। किंतु यह क्या? वे कुत्ते मुनिराज की परिक्रमा करके उनके सामने बैठ गए। बिंबसार को लगा कि यह अवश्य ही कोई तांत्रिक है जिसने कुत्तों पर अपना जादू चला दिया है। ऐसे दुष्ट तांत्रिक का तो वध कर देना चाहिए। यह सोचकर बिंबसार ने तलवार निकाली और मुनि की ओर



बिम्बसार को लगा कि ये अवश्य ही कोई तांत्रिक है

बड़े तभी एक भयानक सांप सामने आ गया। उसे बिम्बसार ने तलवार से मार डाला। फिर उस मरे सांप को मुनिराज के गले में डालकर चले आए।

रात को बिम्बसार ने यह घटना जब रानी चेलना को सुनाई तो वह दुखी होकर रोने लगी— 'महाराज! आपने यह महापाप क्यों किया? वह तो मेरे गुरु महामुनि यशोधर हैं। इस कर्म का तो बहुत दुखद परिणाम होगा। आप चलकर तत्काल क्षमा मांग लें।'

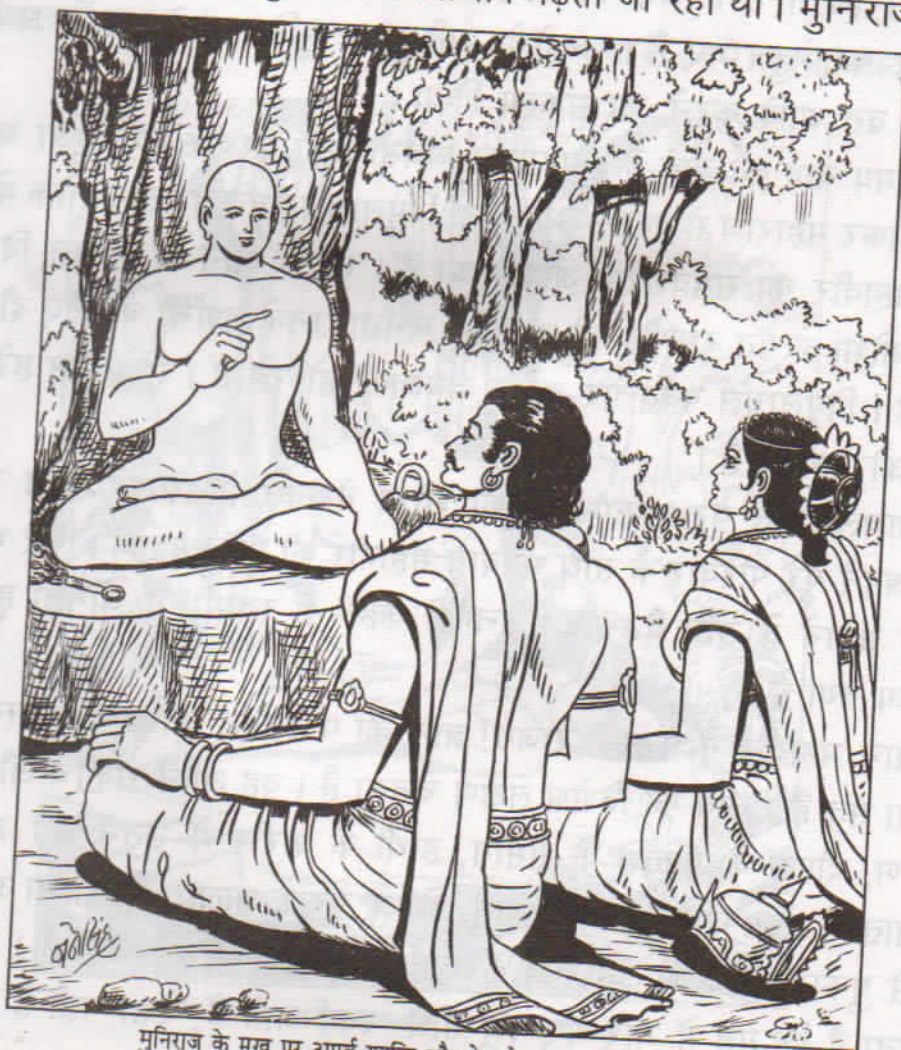
पहले तो बिम्बसार जाने के लिए तैयार न हुए। किंतु फिर मुनिशाप के भय से मान गए। उन्होंने तुरंत तेज घोड़ों वाला रथ मंगवाया। फिर स्वयं महाराज बिम्बसार और रानी चेलना, वन में उसी स्थान की ओर गए जहां मुनिराज बैठे थे।

महाराज बिम्बसार को यह देखकर दुःख और आश्चर्य हुआ कि मुनिराज अभी-भी उसी प्रकार बैठे थे। राजा के मन में मुनिराज के प्रति अपार श्रद्धा जाग उठी। उन्होंने उनके पास जाकर तुरंत सर्प निकाल कर फेंक दिया। रानी चेलना ने देखा कि

चींटियों ने मुनिराज के शरीर में जगह-जगह घाव कर दिए हैं। अस्तु अपने साथ लायी चंदन का लेप उन घावों पर लगाया जिससे मुनिराज को शीतलता पहुंची। इस प्रकार मुनिराज की सेवा करके दोनों- राजा और रानी उनके सामने हाथ जोड़कर बैठ गए। मुनिराज अभी ध्यान में थे। प्रातः काल जब मुनिराज ने आंखें खोलीं तो राजा बिंबसार और रानी चेलना को देखा। रानी चेलना ने मुनिराज को प्रणाम किया और उनकी वंदना करने लगी।

मुनिराज के मुख पर अपूर्व शांति और तेज देखकर बिंबसार चकित थे। उन्होंने भक्तिभाव से उन्हें प्रणाम किया और अपने कृत्य के लिए क्षमा मांगी। मुनिराज ने दोनों को आशीर्वाद देते हुए कहा- 'आप दोनों की धर्मवृद्धि हो।'

महाराज बिंबसार पर मुनिराज का प्रभाव बढ़ता जा रहा था। मुनिराज ने कहा-



मुनिराज के मुख पर अपूर्व शांति और तेज देखकर बिंबसार चकित थे

हे राजन! तुम्हारे मन में जो पश्चाताप की अग्नि जल रही है, उसने तुम्हारे हृदय को निर्मल बना दिया है। तुमने इस दुःख के कारण आत्महत्या को जो विचार मन में किया है, उसे छोड़ दो।'

बिंबसार को बड़ा आश्चर्य हुआ कि मुनिराज ने उनके मन की बात कैसे जान ली। वह वास्तव में मुनिराज का अपमान करने के कारण इतनी ग्लानि अनुभव कर रहे थे कि जी चाहता था कि आत्महत्या कर लें। उन्होंने यह बात जब रानी चेलना को बतायी तो वह बोलीं— 'अब तो आपको मुनिराज के सर्वज्ञ होने पर विश्वास हुआ!'

'हां महारानी! मैं वास्तव में भटक गया था। अब मैं जिन-धर्म के विषय में जानना चाहता हूं।'

तब मुनिराज ने उन्हें धर्म का महत्त्व बताया। महाराज बिंबसार को लगा उसे उनके ज्ञान-चक्षु खुल गए हैं। उन्होंने उसी समय मुनिराज से श्रावक धर्म ग्रहण किया और व्रत आदि करने का संकल्प किया।

कुछ समय बाद की बात है। महाराज बिंबसार का दरबार लगा हुआ था। एक माली ने आकर महाराज से कहा— 'महाराज! विपुलाचल पर्वत पर तीन लोक के स्वामी भगवान महावीर का समवशरण आया हुआ है। उनके आने से समस्त विपुलाचल पर्वत की शोभा अत्यंत रमणीक हो गयी है। जनता उनके दर्शनों के लिए दौड़ी चली आ रही है। विपुलाचल पर्वत पर अनेक चमत्कार हो रहे हैं। सूखे वृक्ष हरे हो गए हैं। हर ओर शांति है।'

विपुलाचल पर्वत पर समवशरण की शोभा देखकर बिंबसार चकित रह गए। उन्होंने अपने पूरे परिवार के साथ भगवान महावीर की परिक्रमा की। फिर भक्तिभाव से उनके सामने वे लोग बैठ गए। उन्होंने कहा— हे स्वामी! मैं जानता हूं कि धर्म का स्वरूप क्या है?'

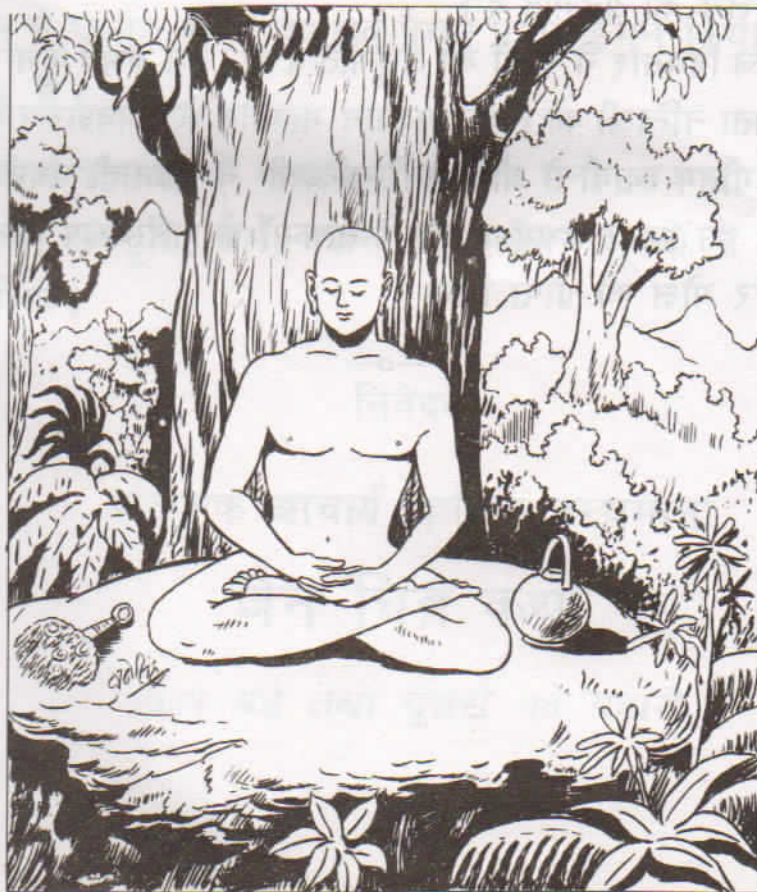
भगवान महावीर ने कहा— 'राजन! ज्ञान की पराकाष्ठा ही सम्यक् ज्ञान है। यह जीव सदा सत् है। जीव का विशेष लक्षण चेतना है। वह अपने संकोच और विस्तार के कारण, दीपक के प्रकाश के समान, हाथी के शरीर में उतने बड़े आकार का ही हो जाता है। इस जीव को प्राणी, जंतु, क्षेत्रज्ञ, पुरुष, आत्मा, अंतरात्मा आदि अनेक नामों से पुकारते हैं। जो इस जीव का घात करते हैं। वे बड़े पापी हैं। कुछ लोगों का कहना है कि यज्ञ में मारे गए पशु सीधे स्वर्ग जाते हैं, ऐसा नहीं है। यदि ऐसा

होता तो लोग कर्म क्यों करते, अपने मां-बाप को मारकर सीधे स्वर्ग न पहुंचा देते। संसार में मद्य, मांस तथा मधु से अधिक अपवित्र खाद्य पदार्थ और कुछ भी नहीं है। इसी प्रकार बड़, पीपल-पाकर, गूलर तथा अंजीर के साथ पांच उदुम्बर फलों को नहीं खाता वह अष्ट मूल गुण का पालक कहलाता है। यह भी ध्यान रखो कि मुनिव्रत ग्रहण किए बिना मुक्ति कदापि नहीं है।'

इसके बाद भगवान महावीर स्वामी से अनेक व्यक्तियों ने अपने मन की शंकाएं दूर करने के लिए प्रश्न किए। भगवान महावीर ने उनके मन की शंकाएं दूर कीं और संतोष जनक उत्तर दिए।

महाराज बिंबसार के सभी पुत्र व रानियां भी वहां उपस्थित थीं। उन्होंने भी अपने-अपने प्रश्नों के उत्तर ग्रहण किए।

राजमहल में जब सभी लोग वापस आए तो अभय कुमार उनमें सबसे ज्यादा उद्वेलित



अभय कुमार ने सत्कर्मों के फलस्वरूप जिन धर्म की तप साधना की

दिखाई दे रहे थे। महाराज बिंबसार के पूछने पर अभय कुमार ने कहा- 'आज भगवान महावीर के वचनों से मेरी आंखें खुल गयीं। अब मुझे यह संसार असार दिखने लगा है। यदि आज्ञा हो तो मैं भगवान महावीर स्वामी के पास जाकर मुनि दीक्षा ग्रहण कर लूँ।' इस पर बिंबसार के दो अन्य पुत्र वारिषेण और गजकुमार भी दीक्षा ग्रहण करने की अनुमति मांगने लगे। साथ ही अभय कुमार की मां नन्दिश्री ने भी अनुमति मांगी।

महाराज बिंबसार कुछ देर के लिए चिंता में डूब गए कि अनुमति दें या नहीं। उन्होंने कहा- 'मैं सोच नहीं पा रहा हूँ कि क्या करूँ? मेरा कर्तव्य बोध कहता है कि तुम सबको अनुमति दे दूँ, किंतु तुम सबके लिए मेरे मन का मोह मुझे रोकता है।'।

तब नन्दिश्री ने कहा- 'महाराज! हम लोगों के प्रति मोह कैसा? इस संसार में कोई किसी का साथ नहीं देता है। आप मोह त्याग कर कर्तव्य पालन करें और हम चारों को जिन दीक्षा लेने की अनुमति दें।

और महाराज बिंबसार ने चारों को अनुमति दे दी। तब अभय कुमार अपने दोनों भाइयों और माता नन्दिश्री को लेकर भगवान महावीर के समवशरण में गए। तीनों राजकुमारों ने गौतम स्वामी से और रानी नन्दिश्री ने महासती चंदनबाला से दीक्षा ग्रहण कर ली। इस प्रकार अभय कुमार ने सत्कर्मों के फलस्वरूप जिन धर्म की तप साधना की और मोक्ष को प्राप्त किया।

—०—



# आप से कुछ कहूँ

जैन आगम साहित्य प्रथमानुयोग में, संसार की श्रेष्ठ कहानियाँ का अक्षय भंडार भरा है। चारित्रता, नीति, उपदेश, वैराग्य, बुद्धिचातुर्य, वीरता, साहस, विनयगुण, धैर्य, मैत्री, सरलता, क्षमाशीलता, व्रत उपवास तपस्या आदि विषयों पर लिखी गई हजारों सुन्दर शिक्षाप्रद रोचक कहानियों में से चुन चुन कर सरल भाषा शैली में भावपूर्ण रंगीन चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत करने का सर्व प्रथम प्रयास हमने किया था जो काफी प्रगृति पर है।

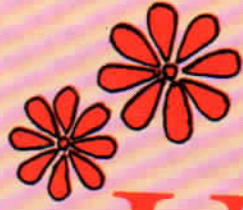
जैन चित्र कथाओं के माध्यम से आपका मनोरंजन तो होगा ही साथ ही इतिहास, संस्कृति, धर्म, दर्शन और जीवन मूल्यों से आपका सीधा सम्पर्क होगा।

निवेदक

प्रकाशक आचार्य धर्मश्रुत ग्रन्थमाला

जैन चित्र कथा

आप पढ़ें तथा दूसरों को पढ़ाये



# UMed

Creations

SHIRTING • SAREE • DRESS MATERIALS

OFFICE :

7, Light Industrial Area

Jodhpur- 342003

Phone : 740972, 741957

---

प्रकाशन सहयोगी

श्रीमति स्व. सुन्दर बाई धर्म पत्नी स्व० श्री जगाती लखमी चंद जैन

टड़ा (सागर म. प्र.)

पुण्य स्मृति में प्रकाशित

---

प्रकाशन सहयोगी

श्री विमलकुमार जैन बड़जात्या,

420 मिन्ट स्ट्रीट चैन्नई (मद्रास)

---